मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ अगस्त : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : २

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
(पुण्यतिथि : 18 अगस्त)

पं इन्द्र विद्यावाचस्पति
(पुण्यतिथि : 23 अगस्त)

पं गंगा प्रसाद उपाध्याय
(पुण्यतिथि : 29 अगस्त)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस, श्रावणी पर्व और योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

ब्रह्मचर्य की अद्भुत शक्ति

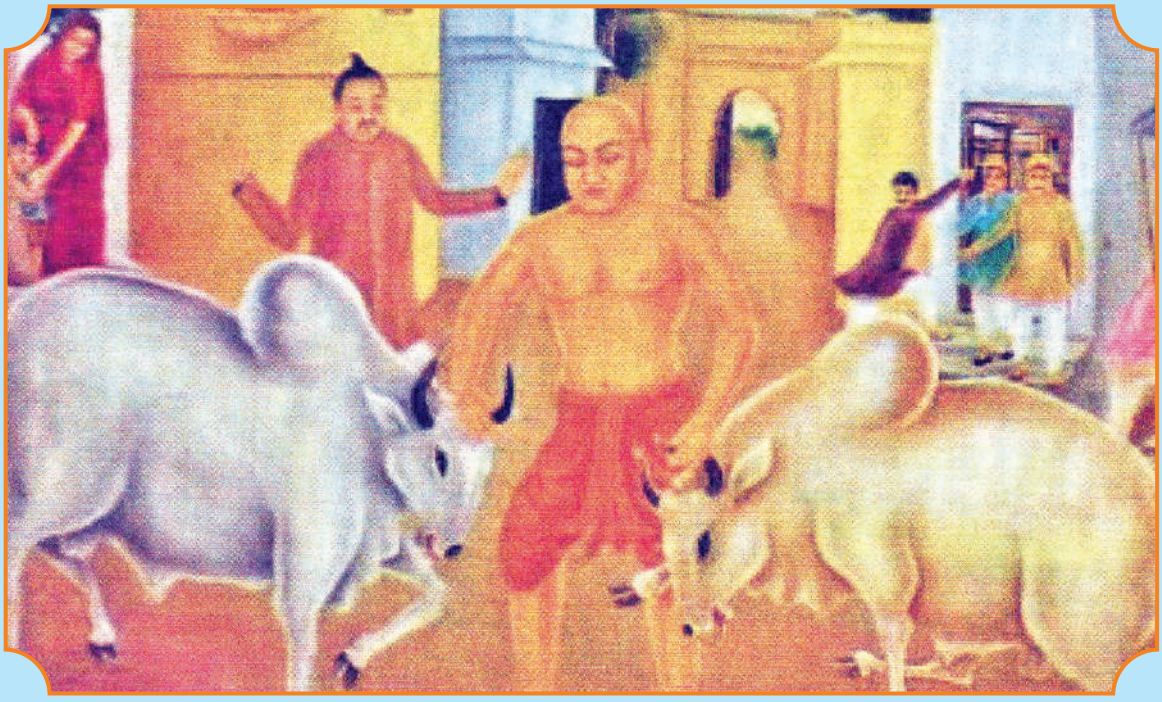

लड़ते हुए बैलों को अलग करते हुए योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द जी

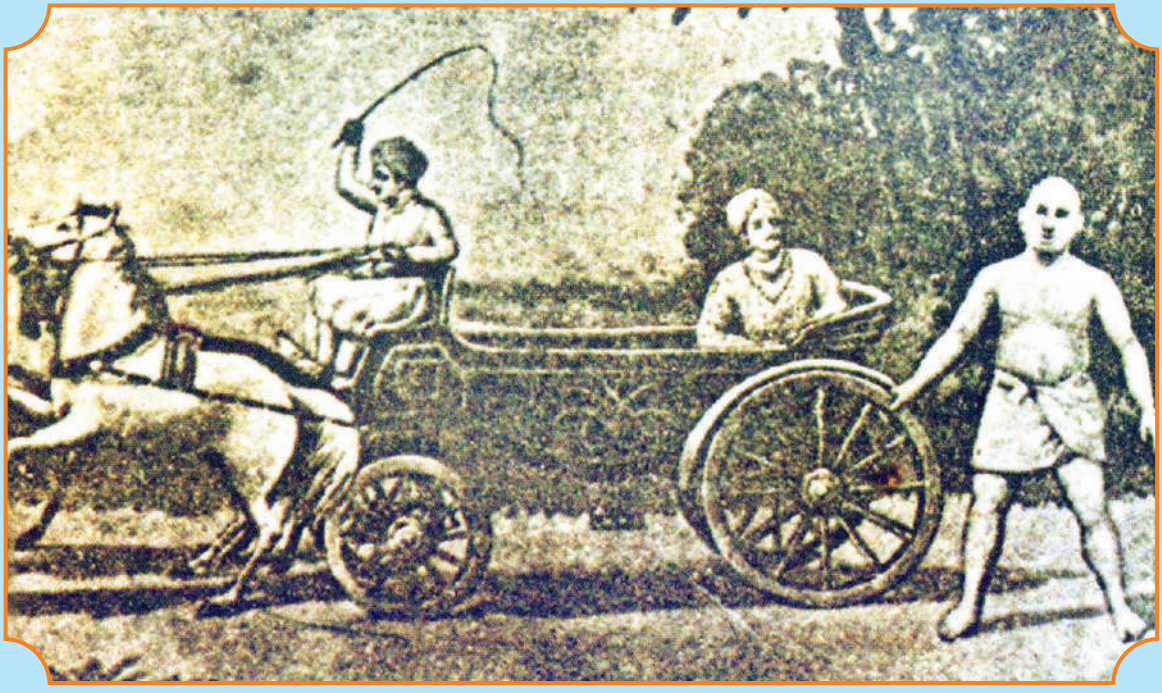

दो घोड़ों की बग्घी को रोकते हुए योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द जी।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : अलग अंदाज में होगा...	2
2.	हम निष्पक्षता से विचार करें	3
3.	हैदराबाद सत्याग्रह...	4-5
4.	वेद, कुरान और बाइबिल में...	6
5.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी...	7
6.	पाप कर्मो का त्याग तथा वेद...	8-9
7.	षोडश कलाएं मर्यादा पुरुषोत्तम...	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	क्रांतिकारियों के मार्मिक किस्से	15
10.	श्रावणी पर्व की महत्ता	20
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	प्रेरक जीवन के धनी योगीराज...	23

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

अलग अंदाज में होगा स्वतंत्रता दिवस

दुनिया के बाकी देशों की तरह भारत भी इस वक्त कोरोना वायरस से लड़ रहा है। इस बीच 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस कैसे मनाया जाएगा इस पर विचार करना जरूरी है। लाल किले पर इस बार स्वतंत्रता दिवस समारोह सोशल डिस्टेंसिंग के साथ एकदम अलग अंदाज में मनाया जाएगा। वहीं, सबसे बड़ा सरप्राइज होगा– कोरोना से जंग में फ्रंटलाइन वॉरियर्स के अलावा ऐसे कुछ लोगों को कार्यक्रम में बुलाया जाना जो इस बीमारी से जंग जीतकर ठीक हुए हों। करीब 1500 कोरोना वॉरियर्स और ठीक हो चुके लोगों की मौजूदगी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित कर सकते हैं।

लाल किले पर 15 अगस्त की तैयारियों से जुड़े सूत्रों ने यह जानकारी देते हुए बताया कि कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए इस बार काफी कुछ बदला–बदला नजर आएगा। ध्वजारोहण, परेड और पीएम का राष्ट्र के नाम संबोधन... ये तीनों पहले की तरह होंगे। सुरक्षा में भी कोई कटौती या फेरबदल नहीं किया जाएगा, बल्कि इस बार यह और मजबूत होगी। लाल किला मैदान में हर बार करीब 10 हजार लोग इस राष्ट्रीय पर्व का गवाह बनते थे, लेकिन इस बार इनकी जगह करीब 1500 कोरोना वॉरियर्स को यहां आमंत्रित किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि इससे इस महामारी से लड़ाई में इनका मनोबल और उंचा हो सके और कोरोना से जूझ रहे देश को भी इनके जरिए प्रधानमंत्री सकारात्मक संदेश दे सकें।

लाल किले की प्राचीर पर प्रधानमंत्री स्टेज के दोनों ओर हर बार 800 चेयर लगाई जाती थीं। इनमें एक ओर 375 और दूसरी ओर 425 चेयर लगती थीं। इन्हें घटाकर इस बार करीब 150 किया जा रहा है। ऊपर जितने भी वीवीआईपी बैठते थे, वे इस बार नीचे ग्राउंड में बैठेंगे। 4200 सामान्य स्कूली बच्चों की जगह करीब 400 एनसीसी कैडेट को बुलाए जाने की की संभावना है। यह सब दिल्ली के विभिन्न स्कूलों के होंगे।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

लाल किले पर इस बार स्वतंत्रता दिवस समारोह सोशल डिस्टेंसिंग के साथ एकदम अलग अंदाज में मनाया जाएगा। वहीं, सबसे बड़ा सरप्राइज होगा- कोरोना से जंग में फ्रंटलाइन वॉरियर्स के अलावा ऐसे कुछ लोगों को कार्यक्रम में बुलाया जाना जो इस बीमारी से जंग जीतकर ठीक हुए हों। करीब 1500 कोरोना वॉरियर्स और ठीक हो चुके लोगों की मौजूदगी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित कर सकते हैं। लाल किले पर 15 अगस्त की तैयारियों से जुड़े सूत्रों ने यह जानकारी देते हुए बताया कि कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए इस बार काफी कुछ बदला-बदला नजर आएगा। ध्वजारोहण, परेड और पीएम का राष्ट्र के नाम संबोधन... ये तीनों पहले की तरह होंगे। सुरक्षा में भी कोई कटौती या फेरबदल नहीं किया जाएगा, बल्कि इस बार यह और मजबूत होगी। लाल किला मैदान में हर बार करीब 10 हजार लोग इस राष्ट्रीय पर्व का गवाह बनते थे, लेकिन इस बार इनकी जगह करीब 1500 कोरोना वॉरियर्स को यहां आमंत्रित किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि इससे इस महामारी से लड़ाई में इनका मनोबल और उंचा हो सके और कोरोना से जूझ रहे देश को भी इनके जरिए प्रधानमंत्री सकारात्मक संदेश दे सकें। लाल किले की प्राचीर पर प्रधानमंत्री स्टेज के दोनों ओर हर बार 800 चेयर लगाई जाती थीं। इनमें एक ओर 375 और दूसरी ओर 425 चेयर लगती थीं। इन्हें घटाकर इस बार करीब 150 किया जा रहा है। ऊपर जितने भी वीवीआईपी बैठते थे, वे इस बार नीचे ग्राउंड में बैठेंगे।

हम निष्पक्षता से विचार करें

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

क्या हम आर्यसमाजी वह कार्य कर रहे हैं जिसे करना परम धर्म व कर्त्तव्य है? क्या हम देव दयानन्द के बताए मार्ग पर चल पा रहे हैं? क्या हमारी संस्थाएं ऋषि कर्त्तव्य का पालन कर रही हैं? क्या हम ऐसे बन पा रहे हैं जैसे आर्यसमाज में होने चाहिए?

हम अपने को आर्य समाज की सम्पति का स्वामी मान लेते हैं। पदों की लोलुपता के बिना महत्व नहीं। कोई प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान नहीं, केवल साप्ताहिक यदा-कदा हवन करने की इतिश्री को ही कर्त्तव्य समझ लेते हैं। राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार ही नहीं सुलझाने की तो क्या कहा जाए? इसी कारण देश-विदेश में पौराणिक कथावाचक अधिक प्रसिद्ध हैं और आर्य समाज के विद्वान दिशाहीन हैं। सिद्धांतहीनता, अलग-अलग यज्ञ पद्धति, पदलोलुपता, आचारहीनता का बोलबाला है। मूर्ति पूजा कई आर्यसमाजियों के घरों में होती है तो वह खंडन क्या करेंगे? वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना, बस तोता रटंत मात्र है। आर्यसमाज भवन तो बड़े-बड़े व पक्के बन गए हैं परंतु आर्यसमाजी कच्चे हैं। तप, त्याग, सेवा, समर्पण, समय, राष्ट्रभक्ति, परोपकार, सदाचार को साक्षात मानने वाले आर्यसमाज के सदस्यों के जीवन में अब स्वार्थ, पद-लोलुपता, गुटबंदी, विवाद हो रहे हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, यज्ञ पुस्तकें, महर्षि का साहित्य, वैदिक पत्रक बांटे नहीं जाते, प्रचार नहीं है क्योंकि अधिकारियों के पास समर्पण व समय नहीं है। अधिकतर समाजों में बारात घर सा माहौल, बैंड-ढोलक, डांस-गाने, नाच-गाना, कभी-कभी नृत्य और बड़े-बड़े भोज का कार्यक्रम किया जाता है। एक प्रकार से दुकानें सी बनी हैं। पवित्रता का ध्यान नहीं दिया जाता। जैसा गुरुद्वारों, चर्चों में, इस्कॉन टैम्पलों में मिलता है।

समाजों में आर्य संन्यासियों-अतिथियों को ठहरने नहीं दिया जाता। **आर्य समाज नोएडा एक अपवाद है। यहां अतिथि आते रहते हैं।** अधिकतर समाजों में महर्षि के आदर्शों को, आर्य समाज के नियमों और सिद्धांतों को ताक पर रखा जाता है। अधिकतर लोग स्वार्थ सिद्धि, पद-लोलुपता के लिए आते हैं। कोई आत्मिक शान्ति, सामाजिक उन्नति हेतु नहीं। त्यागी, तपस्वी, विद्वान उपदेशक, यज्ञनोपदेशक अब मिलते नहीं। आर्य समाज जाति प्रथा, कुरीतियों, पाखंडवाद का विनाश करने वाला रहा है। परंतु अब आर्य समाज के सदस्य पूर्वत: जातिवाद और दहेज जैसी कुरीतियों में जकड़े हुए हैं। भारतीय वेषभूषा से दूर हैं। नाम और धन के लोभ में फंसे लोग आर्यों की गरिमा को नष्ट कर रहे हैं। हमें आर्यों की जनसंख्या में निरंतर हो रही कमी पर विचार करना चाहिए और उचित निर्णय लेकर प्रयास करना चाहिए।

राष्ट्रीय आंदोलन चलाने वाला आर्यसमाज कोई भी राष्ट्रीय समस्या के लिए आंदोलन नहीं चलाता। गाय, बैल, बछड़े काटे जाते हैं कोई आंदोलन नहीं, प्रदूषण निवारण, अंग्रेजी वैश्यालय, अश्लीलता से भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। शास्त्रार्थ के लिए विद्वान नहीं मिलते। टी.वी. पर दिन रात पाखंड-ढोंग परोसे जाते हैं। जिससे नवयुवक-युवतियां भ्रमित होतीं हैं, दिशाहीन हो रहे हैं, परंतु कोई विरोध नहीं। क्या हमारी सभाएं 2-3 टीवी चैनल नहीं खरीद सकती जो कि इनका प्रतिकार कर सकें? क्यों हमें लज्जा नहीं आती? क्या विश्व की सर्वोत्तम संस्था आर्य समाज की सेवा करने के लिए हमें कुछ करने की प्रेरणा मिलती है या नहीं? अगर हां तो विश्व कल्याण के कुछ कार्य हमें आर्यसमाज को मिशनरी भाव से करने की आवश्यकता है आओ आत्मावलोकन कर सुधार करने का प्रयास करें। अगर हम सभी संगठित हो जाएं, एक भाव, एक सुख-दुख, एक मन, एक विचार वाले हो जाए जैसा कि संगठन सूक्त में भी कहा गया है तो हम शक्ति सम्पन्न होकर विजय प्राप्त कर सकते हैं। आर्य पुरोहितों, आचार्यों को अन्य मतावलंबियों के यहां वैदिक धर्म का प्रकाश करना लक्ष्य व उद्देश्य होना चाहिए। लोगों के घरों में जाकर बिना लोभ के प्रचार करने से लोगों में जागृति आ सकती है। आज स्थिति यह है कि निर्धन तो क्या समर्थ्यवान भी यज्ञ एवं संस्कार कराते हुए कतराते हैं, कितना भी कहें आप बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ एवं अन्य शुभ अवसरों पर अपने घर यज्ञ एवं संस्कार कराया कीजिए परंतु इसका प्रभाव समाज के एक प्रतिशत पर भी नहीं होता। इस पर गहन चिंतन विचार करने की आवश्यकता है तभी हमारी संस्थाएं बच सकेंगी।

हैदराबाद सत्याग्रह

आज से 70 वर्ष पूर्व 17 सितम्बर 1948 हैदराबाद राज्य 'वर्तमान का हैदराबाद शहर और कर्नाटक राज्य' का विलय भारतीय संघ मे हुआ था। तत्कालीन हैदराबाद राज्य में बहुमत जनता हिन्दू थी पर राज्य मुसलमान था। निजाम अपनी रियासत को पाकिस्तान में मिलाना चाहता था और 1930 से ही हिन्दुओं को इस्लाम कबूलने के लिए तरह-तरह दबाव बनाया करता था।

हैदराबाद शहर में प्रथम आर्य समाज की स्थापना 1892 में हुई। 1938 तक तत्कालीन हैदराबाद राज्य में 250 से ज्यादा आर्य समाज के केंद्र खुल गए थे। इसी के साथ आर्य समाज ने बहुसंख्यक हिन्दूओं के हित में आर्य समाज में अपनी आवाज बुलंद करनी शुरू कर दी थी। जिन्हें दबाव से मुसलमान बनाया गया था उनके लिए शुद्धि आंदोलन चलाया गया। 'घर वापसी में प्रख्यात विद्वान पंडित रामचंद्र देहलवी जी के भाषणों का महत्वपूर्ण योगदान रहता था।' आर्य समाज को हैदराबाद को इस्लामिक राज्य बनाने में सबसे बड़ा रोड़ा मानते हुए निजाम ने संगठन पर कड़े प्रतिबंध लगाने के आदेश दिए। इसमें सम्मेलन करने, नई जगह पर हवन करने पर प्रतिबंध था। ओ३म् का भगवा झंडा लहराने पर भी जेल भेज दिया जाता था।

9 अक्टूबर 1938 को आर्य समाज ने महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में निजाम के विरुद्ध पहला सत्याग्रह किया। इसके बाद करीब 6 और सत्याग्रह हुए। 12000 सत्याग्रहियों में से 7000 हैदराबाद राज्य के बाहर से थे। इसमें बड़ी संख्या गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के ब्रह्मचारियों की थी। सैकड़ों कार्यकर्ताओं जेल में डाला गया जिसमें से कुछ ने अनशन के दौरान अपने प्राण त्याग दिए। आज देश का दुर्भाग्य है कि जिन लोगों ने कभी इतिहास पढ़ा नहीं वह इतिहास बदलने की बात करते हैं। संसार के सम्मानित राष्ट्रों का इतिहास उन व्यक्तियों के चरित्रों से सदा भरपूर रहा है, जिन्होंने उच्च एवं पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महान् त्याग किया और समय पड़ने पर इस संघर्ष में जीवन को न्योछावर कर दिया और पीछे बलिदानों के अवशेष रख गए।

शहीदों को मृत्यु कभी स्पर्श नहीं करती अपितु वे स्वयं मरकर अमर हो जाते हैं। इतिहास साक्षी है, ऐसी महान् आत्माओं का रक्त कदापि व्यर्थ नहीं गया अपितु समय आने पर एक ऐसे प्रखर प्रचंड रूप में प्रवाहित हो निकला जिसमें हिंसा, अत्याचार के दल स्वत: निमग्न हो गए। आर्य समाज के शहीद मरने के बाद अमर हो गये और इन हुतात्माओं के रक्त से हैदराबाद में वैदिक धर्म का जो चमन सींचा गया। यहां कुछ आर्य समाजी शहीदों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं जो संसार में उपस्थित तो नहीं हैं पर वे सबके हृदयों में स्मरण रहेंगे और ऐसा प्रतीत होता है कि हम इन्हें कभी भूल नहीं सकेंगे।

वेद प्रकाश जी : वेद प्रकाष जी का पूर्व नाम दासप्पा था। दासप्पा 1827 में गुजोटी में पैदा हुए। इनकी माता का नाम रेवती बाई और पिताश्री का नाम रामप्पा था। गरीब माता-पिता को इसकी क्या सूचना थी कि उनका बेटा बड़ा होकर हुतात्मा बनेगा और वैदिक

धर्म के मार्ग में शहीद होकर अमर हो जाएगा। दासप्पा ने मराठी माध्यम से आठवीं श्रेणी तक शिक्षा ग्रहण की। जैसे-जैसे ये बढ़ते गये वैसे-वैसे वे धर्म की ओर आकर्षित होते गये। वे आर्य समाज के सत्संगों में बराबर सम्मिलित होते थे। वैदिक धर्म के आकर्षण ने इन्हें महर्षि दयानन्द का पक्का भक्त बना दिया। आर्य समाजी बनने के बाद यह वेद प्रकाश कहलाने लगे थे। वेद प्रकाश जी सुगंठित शरीर एवं सद्गुण रखते थे और लाठी-तलवार चलाने की विद्या में पर्याप्त दक्ष थे। इनकी यह दक्षता कई भयंकर संकटों के समय सहायक सिद्ध हुई। कई बार विरोधी दल ने इन पर आक्रमण किये और ये अपने आपको सुरक्षित रखने में सफल हुए।

गुंजोटी का छोटे खां नाम का एक पठान स्त्रियों को गलत निगाहों से देखता था। एक दिन वेद प्रकाश जी ने इसे ऐसा करने से रोका और सावधान किया कि भविष्य में इस प्रकार कुदृष्टि स्त्री समाज पर न डालें। यह बात गुंडों को हृदयग्राही न थी और सब इनके शत्रु हो गए। वेद प्रकाश जी ने गुंजोटी में हिन्दुओं के लिये पान की एक दुकान खोल दी और चांद खान पान का एक व्यापारी इनका शत्रु हो गया और भीतर ही भीतर इनके विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगा। एक दिन यवनों ने स्थानीय आर्य समाज के मंत्री के

मकान पर अकस्मात् धावा बोल दिया, इसकी सूचना वेद प्रकाश जी को मिली, वे आक्रमणकारियों को रोकने के लिए नि:शस्त्र ही चले गये। मंत्री के मकान के समीप दो-तीन मुसलमानों ने इन्हें पकड़ लिया और आठ-नौ व्यक्तियों ने इन्हें नीचे गिरा कर हत्या कर दी। हत्यारों को पहचान लिया गया और न्यायालय में गवाह भी उपस्थित किये, पर फिर भी हत्यारों को निर्दोश घोषित कर दिया गया। वेद प्रकाश जी का रक्त हैदराबाद में पहला रक्त था जो बड़ी निर्दयता के साथ बहाया गया था इसके बाद वीर आर्यों के बलिदानों का एक सिलसिला सा चल पड़ा।

धर्म प्रकाश जी : धर्म प्रकाश जी का पूर्व नाम नागप्पा था। नागप्पा जी का जन्म कल्याणी में 1839 में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम सायन्ना था। इनका पदार्पण जब आर्य समाज में हुआ तब से ये धर्म प्रकाश कहलाने लगे। कल्याणी एक मुस्लिम नवाब की जागीर थी। वहां मुसलमानों का अत्याचार नंग-नाच कर रहा था। कल्याणी के इस धर्मवीर पर कई बार आक्रमण किये गये पर आक्रमकारियों को सफलता नहीं मिली। कल्याणी के खाकसार इनकी हत्या की ताक में रहने लगे। 27 जून 1837 की रात को धर्म प्रकाश आर्य समाज कल्याणी के सत्संग से अपने घर वापस जा रहे थे कि खाकसारों ने इन्हें एक गली में घेरकर बरछों और भालों की सहायता से मार डाला।

महादेव जी : महादेव जी अकोलगा के रहने वाले थे। साकोल आर्य समाज के सत्संगों में जब इन्हें कई बार सम्मिलित होने का अवसर मिला, तब वैदिक धर्म का जादू इन पर चढ़ गया। इनके मन और मस्तिक पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आर्य समाजी बन जाने के बाद वैदिक धर्म के प्रचार की धुन लग गयी। तरुणोत्साह और साहस इन्हें इस मार्ग पर आगे बढ़ाता ही रहा। भाषण देते समय इनके मुख से जो वाक्य निकलते, उन्हें लोग बड़ी तन्मयता और रुचि से सुनते और एक तरुण आर्य युवक को प्रचार के काम में इस प्रकार तल्लीन देखकर लोगों को भी इच्छा होती थी कि वे भी इसी प्रकार बनें। इनके प्रचार का काम जब प्रगति पर था उस समय मुसलमान इनके अकारण शत्रु बन गये। इन पर इस दृष्टि से आक्रमण हुए कि वे सदा के लिए मौन हो जाए पर वे बचते ही रहे। एक दिन की घटना है कि महादेव जी अपने प्रिय धर्म प्रचारार्थ कहीं जा रहे थे कि रास्ते में किसी अज्ञात व्यक्ति ने पीछे से आकर छुरा घोंप दिया और 14 जुलाई 1938 के दिन यह आर्य युवक 25 वर्ष की आयु में सदा के लिए इस संसार से बिदा हो गया।

श्याम लाल जी : धर्मवीर श्याम लाल जी का जन्म 1903 भालकी में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम भोला प्रसाद और माता का छोटूबाई था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मराठी में हुई। ये एक पौराणिक परिवार से थे। इनके एक मामा आर्य समाजी थे, जिनके प्रभाव से श्याम लाल जी के ज्येष्ठ भ्राता बंसीलाल जी वैदिक धर्म के अनुयायी और स्वामी दयानन्द के अन्त:करण के भक्त बन गये और आर्य समाज के सर्वप्रिय नेता भी कहलाने लगे। गुलबर्गा में आपके ही प्रयासों से आर्य समाज की स्थापना हुई। वे स्वयं इस समाज के मंत्री बनकर कार्य संचालन करते रहे। 1925 में वकील बने और उदगीर में वकालत करने लगे। निजी जीविकोपयोगी कार्य करते हुए आर्य समाज का प्रचार भी करते थे। 1926 में इन्हें चर्म रोग लग गया और वह इतना बढ़ा कि पूरा शरीर फूल गया। रोग निवारणार्थ आप लाहौर गये। अभी आप लाहौर में ही थे कि 1926 में स्वामी श्रद्धानन्द जी शहीद हो गये। स्वामी जी के इस बलिदान का प्रभाव इन पर अत्यधिक पड़ा।

होली के जुलूस के अवसर पर आप पर पुन: आक्रमण हुआ पर इस बार भी आप बच गये। श्याम लाल जी ने अछूतों के लिए एक पाठशाला, एक व्यायाम शाला तथा एक नि:शुल्क चिकित्सालय भी स्थापित किया। 1928 में उदगीर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ और इसी के बाद पुलिस आपका पीछा करने लगी। इसी वर्ष धारा 104 के अधीन आप पर झूठा मुकदमा चलाया गया और आपसे दो हजार की जमानत और मुचलका लिया गया। श्याम लाल जी उदगीर से बाहर निकलकर भालकी, कल्याणी, औराद, शाहजहानी, लातूर तथा औसा आदि स्थानों पर प्रचार करने लगे।

कई बार मुसलमानों ने आप पर आक्रमण किया और कई ऐसे अवसर आये जब कि हिन्दुओं ने आपको अपने पास आश्रय देना अस्वीकार किया। आपने कई रातें मार्ग पर चलते हुए बितायीं और दिन में फिर प्रचार कार्य किया। 1935 में माणिक नगर की यात्रा के अवसर पर मुसलमानों ने आप पर छुरा घोंप देने का प्रयत्न किया पर एक नवयुवक बीच में आया, स्वयं जख्मी हुआ और इन्हें बचा लिया। 1938 में इन पर पुलिस ने एक झूठा मुकदमा चलाया और न्यायालय ने इन्हें दीर्घकालिक दंड दिया। अभी आप कारावास में दंड भोग रहे थे कि आपका देहांत हो गया।

वेद, कुरान और बाइबिल में नारी का तुलनात्मक अध्ययन

वर्तमान समय में आज भी हमारे देश में स्त्रियों का अपमान हो रहा है, विभिन्न प्रकार के धार्मिक ग्रंथ बनाएं जा रहे हैं, धर्म भी विभाजित कर दिए गए हैं जिसमें स्त्रियों को कलंकित किया जा रहा है जिसका प्रभाव हमारे साधारण भाइयों, जवान युवकों पर पड़ रहा है। वो उन्हें सदैव नीच दृष्टि से देखते हैं, अश्लील बातें करते हैं, स्त्रियों का विरोध तक करते हैं। ये बहुत ही निंदनीय है कि नारी जिससे समस्त संसार है उसे ही मनुष्य नीच निगाहों से देखते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है वेद की आज्ञा को न मानकर कुरान और बाइबिल आदि के बातों को मानना जबकि प्राचीन-वैदिक काल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता था। उस समय स्त्रियां विदुषी हुआ करती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, वयुना, धारिणी आदि इसके उदाहरण हैं। यहां सभी पुस्तकों से नारी के अस्तित्वों एवं अधिकारों का संक्षिप्त विवरण देता हूं फिर अंतर समझ आएगा कि किस पुस्तक अथवा ग्रंथ ने नारी के अस्तित्व को ऊंचा बनाये रखा है?

कुरान में स्त्रियों की दशा : कुरान भी ऐसी ही पुस्तक हुई है कि जिसने स्त्रियों के अस्तित्व को मिटा दिया है। कुरान में कुंवारा रहना मना है बिना विवाह के कोई मनुष्य रह नहीं सकता। इसमें स्त्रियों को नीचा दिखलाने के संदेश ही दिए गए हैं। व करना फी बयूतिकुन्ना। (सूरते अहज़ाब आयत 32) और ठहरी रहो अपने घरों में। यह वही आयत है जिसके आधार पर परदा प्रथा खड़ी की गई है। इससे शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक सब प्रकार की हानियां होती हैं और हो रही हैं। 'फ़मा अस्तमत अतमाबिहि मिन्हुदन्ना फ़आतूहुन्ना अजूरहुन्ना फ़री ज़तुन।' और जिनसे तुम फायदा उठाओ उन्हें उनका निर्धारित किया गया महर दे दो। संतान हो जाने पर किसी ने तलाक दे दिया तो? फ़रमाया है- बल बालिदातोयुरज़िअना औलादहुन्ना हौलैने कामिलीने, लिमन अरादा अन युतिम्मरज़ाअता व अललमौलूदे लहू रिज़ कहुन्न व कि सवतहुन्ना बिल मारुफ़े। (सूरते बकर आयत-233) और मांऐ दूध पिलायें अपनी संतानों को पूरे दो वर्ष। और यदि वह (बाप) दूध पिलाने की अवधि पूरा कराना चाहे। और बाप पर (जरूरी है) उनका खिलाना, पिलाना और कपड़े-लत्तों का (प्रबंध) रिवाज के अनुसार मां का रिश्ता इतना ही है औलाद से, इससे बढ़कर उनकी वह क्या लगती है? फिर बहु विवाह की आज्ञा है। कहा है- फ़न्किहु मताबालकुम मिनन्निसाए मसना व सलास वरूब आफ़इन ख़िफ्तुम इल्ला तअदिलू फ़वाहिदतन ओमामलकत ईमानुकुम। -(सूरते निसा आयत 3)। फिर निकाह करो जो औरतें तुम्हें अच्छी लगें। दो, तीन या चार, परंतु यदि तुम्हें भय हो कि तुम न्याय नहीं कर सकोगे (उस दशा में) फिर एक (ही) करो जो तुम्हारे दाहिने हाथ की सम्पत्ति है। यह अधिक अच्छा है ताकि तुम सच्चे रास्ते से न उल्टा करो। उपरोक्त प्रमाण द्वारा सिद्ध होता है कि इस्लाम केवल स्त्रियों की रक्षा नहीं अपितु स्त्रियों से व्यभिचार करना चाहता है अत: कुरान पढ़कर भी नारी की रक्षा नहीं हो सकेगी।

बाइबिल में स्त्रियों का अस्तित्व : बाइबिल में भी स्त्रियों को कलंकित कर दिया गया है। ईसाई धर्म में स्त्रियों के साथ व्यभिचार करना ही सिखाया गया है। यहां बाइबिल से भी प्रमाण देख लें-बहिनों के साथ संबंध- 'काइन (आदम का प्रथम पुत्र) ने अपनी पत्नी के साथ सहवास किया। वह गर्भवती हुई और उसने हनोक को जन्म दिया।' -उत्पति 4:17, पिता पुत्री का संबंध- 'दोनों पुत्रियों ने उस रात अपने पिता को मदिरा पिलाई और बड़ी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई।' उन्होंने उस रात भी अपने पिता को शराब पिलाई और छोटी पुत्री जाकर उसके साथ लेट गई' -उत्पति 19:33, 35, 36। ईसाईमत में बाप बेटी का विवाह जायज है। बाइबिल 1 कुरैन्थियो 7 में लिखा है- 'और यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी उस-कुंवारी का हक़ मार रहा हूं, जिसकी जवानी ढल चली है, और प्रयोजन भी होए, तो जैसा चाहें वैसा करें, पाप नहीं, वे ब्याहे जायें'-37, In english- "Let them marry" अर्थात 'उन बाप-बेटी का विवाह हो जाए या वे विवाह कर लें' ऐसा छपा हुआ है। हर व्यक्ति स्वयं सोच सकता है कि जिस मत में ऐसी बात जायज़ मानी जाती हो, वह कैसा मजहब हो सकता है? प्रमाणों से सिद्ध होता है कि बाइबल ने भी स्त्रियों को कलंकित कर रखा है।

वेदों में देवियों का महत्व : वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, वेद भगवान ही हमें स्त्रियों के प्रति आदर करने का आदेश देते हैं। वेद नारी को अत्यन्त महत्वपूर्ण, गरिमामय स्थान प्रदान करते हैं। स्त्रियों के विषय में वेद से कुछ प्रमाण देखें-

यास्तेऽ अग्ने सूर्य्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः। ताभिर्नोऽ अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि।। -यजु. 13/22

भावार्थ : इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। जैसे ब्रह्माण्ड में सूर्य की दीप्ति सब वस्तुओं को प्रकाशित कर रुचियुक्त करती हैं, वैसे ही विदुषी श्रेष्ठ पतिव्रता स्त्रियां घर के सब कार्यों का प्रकाश करती हैं। जिस कुल में स्त्री और पुरुष आपस में प्रितियुक्त हों, वहां सब विषयों में कल्याण ही होता है।

एषा ते कुलपा राजन्तामु ते परि दद्मसि।
ज्योक्पितृष्वासाता आ शीर्ष्णः समोप्यात्।।

–अथर्व. 1/14/3

भावार्थ : विवाह का प्रमुख उद्देश्य वंश का उच्छेद न होने देना ही है, अतः गृहस्थ एक अत्यन्त पवित्र आश्रम है। मस्तिष्क को ज्ञान से अलंकृत करने के पश्चात् ही एक युवती इसमें प्रवेश कर सकती है। फिर उसी सूक्त के अगले मन्त्र में कहा है–

असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्य च।
अन्तः कोशमिव जामयोऽपि नह्यामि ते भगम्।।

भावार्थ : पति 'असित, कश्यप व गय' होता है तो पत्नी उसके लिए 'अंतः कोश' के समान होती है। विशेषः कुलवधू 'भग व वर्च' वाली हो। 1. वर नियमित जीवनवाला व संयमी हो। 2. वह विवाह का मूलोद्देश्य वंश–अविच्छेद ही समझे। 3. अवैषयिक, तात्विक–दृष्टि वाले, प्राणसाधक पुरुष के लिए पत्नी 'अन्तःकोश' सी है। 4. इस प्रकार के घरों में ही प्रेम और मेल बना रहता है। प्रमाणों ने स्पष्ट कर दिया कि सभी पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक वेद ही है क्योंकि इसमें सभी के प्रति आदर करना सिखाया है। इस लेख से आप अनुमान लगा सकते हैं कि निम्न में ईश्वरीय ज्ञान क्या है? जिसमें स्त्रियों को कलंकित किया गया हो या वह जिसमें स्त्रियों को देवी माना गया हो। आजकल के नवीन पुस्तक पढ़कर, चलचित्र देखकर, पाश्चात्य सभ्यता को अपनाकर स्त्रियां भी वेद मार्ग से भटक गयी हैं, जिसका प्रभाव उनके पीढ़ियों पर भी पड़ रहा है। यही कारण है कि उन्हीं के पुत्र उन्हें बुढापे में अकेला छोड़ देते हैं। प्राचीन समय में स्त्रियां विदुषी हुआ करती थीं एवं अपने पुत्रों को श्रेष्ठ शिक्षा दिया करती थीं–

शुद्धोसि! बुद्धोसि! निरन्जनोसि! संसारमाया परिवर्जितोसि।।

अर्थात् माता अपने पुत्र से कहती हैं– 'तू शुद्ध है! तू बुद्ध है! तू निरंजन है! तू संसार की माया से सबसे अलग है।' यही कारण है कि पहले के समय में पुत्र अपने माता की सदैव सेवा किया करते थे।

!! ओ३म्!!

➲ **प्रियांशु सेठ**

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी को श्रद्धापूर्वक नमन है

महर्षि वाल्मीकि द्वारा इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के गुणों के बारे में पूछे जाने पर नारद मुनि उनके व्यक्तित्व के बारे में विस्तार से बताते हैं कि राम नियतात्मा (अंतःकरण को वश में करने करने वाला), महावीर्य, श्रुतिमान, धृतिमान, बुद्धिमान, नीतिमान, वाग्मी, श्रीमान, धर्मेंद्र, प्रजा हित में रत, यशस्वी, ज्ञानसंपन्न, पवित्र तथा राम के शरीर सौष्ठव का वर्णन करते हुए उन्हें दीर्घ स्कंध, महाबाहु, पुष्टगर्दन वाले, बड़ी ठुड्डी युक्त, आजानुबाहु, विकसित वक्षस्थल युक्त तथा बड़ी–बड़ी आंखों वाला तथा श्रीयुक्त हैं।

शत्रु विनाशक हैं, समस्त प्राणियों के रक्षक हैं, वह धर्म के संरक्षक तथा आश्रितजनों के त्राणकर्ता हैं, उन्होंने वेदों और व्याकरण आदि वेदांगों के तत्वों को भलीभांति हृदयंगम किया है तथा धनुर्विद्या में वे निष्णात हैं, सब शास्त्रों के तत्वों को जानने वाले तथा अद्भुत स्मृति और प्रतिभा के धनी वे धैर्य में हिमालय के तुल्य, गंभीरता में समुद्र के समान, बल में विष्णु के समान, चंद्र के तुल्य प्रियदर्शन राम यदि कुसुम के समान कोमल स्वभाव वाले हैं तो वज्र तुल्य कठोर भी हैं, जब वे शत्रुओं पर कुपित होते हैं तो उनका क्रोध कालाग्नि के तुल्य दिख पड़ता है किंतु उनके क्षमाशीलता की भी कोई सीमा नहीं है वे सर्वसहा पृथ्वी की भांति क्षमावान हैं, दानशीलता में कुबेर के तुल्य तथा सत्याचरण में तो अपर धर्म के तुल्य हैं।

ऐसे सब लोकप्रिय, साधु स्वभाव वाले तथा दीनता से रहित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र जी को संक्षेप में कहें तो राम आर्यआदर्शों के प्रतीक हैं जो सदा उज्जवल नक्षत्र की भांति मानवजाति को सतत प्रेरित करते रहेंगें। ऐसे लोकोत्तर महामानव को श्रद्धापूर्वक नमन है!!

➲ **संकलन : आर्ष गुरुकुल, नोएडा**

पाप कर्मों का त्याग तथा वेद धर्माचरण ही जन्म-जन्मान्तरों में सुख व उन्नति का आधार

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य को यह जन्म उसके पूर्वजन्मों के पाप-पुण्यरूपी कर्मों के आधार पर मिला है। वह इस जन्म में जो पाप व पुण्य कर्म करेगा, उससे उसका भावी जन्म निर्धारित होगा। जिस प्रकार फल पकने के बाद वृक्ष से अलग होता है, इसी प्रकार हम भी ज्ञान प्राप्ति और शुभ कर्मों को करके ही जन्म व मरण के बंधनों से मुक्त हो सकते हैं। मनुष्य जो सकाम कर्म करता है उसके फल तो उसे अवश्य भोगने पड़ते हैं। अत: हमें पाप कर्मों का सर्वथा त्याग कर निष्काम भाव से पुण्य कर्मों को करना चाहिये। ऐसा करके ही हम अपने परमजन्म व भावी जीवन को सुखमय, कल्याणमय व मोक्षगामी बना सकते हैं। यही कारण था कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक हमारे देश के मनीषी प्रेय मार्ग को छोड़कर श्रेय मार्ग का चयन करते थे और पापों से मुक्त जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वरोपासना एवं परोपकार के शुभ कर्मों को करते थे। ऐसा करने से ही मनुष्य अपनी आत्मा की उन्नति सहित अपने इस मनुष्य जन्म को सफल कर सकता है।

मनुष्य पाप क्यों करता है? इसका एक सरल उत्तर है कि अज्ञान में पड़कर तथा इच्छा, द्वेष, काम, क्रोध, राग, एषणाओं आदि में फसकर मनुष्य पाप कर्मों को करता है। पापों से मुक्ति अज्ञान दूर कर व विद्या की प्राप्ति सहित अपनी इच्छाओं व कामनाओं का दमन व नियंत्रण करने से होती है। वेदों के अतुलनीय विद्वान, महान ऋषि एवं आदर्श ईश्वर भक्त ऋषि दयानन्द ने लोगों के कल्याण के लिये वैदिक संध्या विधि की रचना की है। यह संध्या विधि ईश्वर की उपासना व ध्यान की सर्वोत्तम विधि है। इस उपासना विधि में उन्होंने आचमन, इन्द्रियस्पर्श, मार्जन एवं प्राणायाम मंत्र के बाद अघमर्षण के तीन वेदमंत्रों का विधान किया है। अघमर्षण पाप से दूर रहने व पाप कर्मों का त्याग करने को कहते हैं। संध्या करते हुए इन मंत्रों का पाठ करने सहित इन मंत्रों के अर्थों पर विचार किया जाता है और संकल्प पूर्वक ईश्वर को यह वचन दिया जाता है कि साधक व उपासक सुखों की प्राप्ति तथा दु:खों से दूर रहने के लिए कभी कोई पाप कर्म नहीं करेगा। अघमर्षण के तीन मंत्र निम्न हैं-

1. ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।।
2. समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।
3. सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

साधक को प्रतिदिन उपासना करते हुए इन मंत्रों के अर्थों पर विचार करना व इन्हें धारण करना होता है। इन पर विचार करने से उसे ईश्वर का सत्यस्वरूप विदित हो जाता है। उसे ईश्वर का न्यायकारी होने तथा मनुष्य को उसके प्रत्येक कर्म का फल देने का

ईश्वर ने ही अपने सहजस्वभाव से जगत के रात्रि, दिवस, घटिका, पल और क्षण आदि को जैसे पूर्वकल्प में थे वैसे ही रचे हैं। इसमें कोई ऐसी शंका करे कि ईश्वर ने किस वस्तु से जगत को रचा है? उसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने अपने अनन्त ज्ञान व बल की सामर्थ्य से सब जगत को रचा है। ईश्वर के प्रकाश से जगत का कारण प्रकाशित होता है और सब जगत के बनाने की सामग्री अनादि प्रकृति ईश्वर के अधीन है। ईश्वर ने अपनी उसी अनंत ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या के खजाने वेदशास्त्र को प्रकाशित किया, जैसा कि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित किया था और आगे के कल्पों में भी इसी प्रकार से वेदों का प्रकाश करेगा। जो त्रिगुणात्मक अर्थात सत्य रज और तमो गुण से युक्त है, जिसके नाम अव्यक्त, अव्याकृत, सत्, प्रधान और प्रकृति हैं, जो स्थूल और सूक्ष्म जगत का कारण है, सो भी ईश्वर द्वारा कार्यरूप होके पूर्वकल्प के समान उत्पन्न हुई है। उसी ईश्वर के सामर्थ्य से जो प्रलय के पीछे हजार चतुर्युगी के प्रमाण से रात्रि कहाती है, सो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है। इसमें ऋग्वेद का प्रमाण है कि 'जब-जब सृष्टि विद्यमान होती है, उसके पूर्व सब आकाश अंधकाररूप रहता है और उसी अंधकार में सब जगत के पदार्थ और सब जीव ढके हुए रहते हैं, उसी का नाम महारात्रि है।'

विधान भी विदित हो जाता है। वह जान जाता है कि यदि वह कोई भी अशुभ कर्म या पाप करेगा तो उसे उसका फल दु:ख के रूप में अवश्य ही भोगना पड़ेगा। इससे उपासक के जीवन से पापाचरण व दुष्टकर्म छूट जाते हैं। उपर्युक्त तीन मंत्रों के अर्थ यह हैं- सब जगत का धारण और पोषण करने वाला और सबको वश में करने वाला परमेश्वर, जैसा उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्वकल्प की सृष्टि में जगत की रचना की थी और जैसे जीवों के पुण्य-पाप थे, उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाये हैं।

जैसा पूर्व सृष्टि में ईश्वर ने सूर्यादि लोकों का प्रकाश रचा था, वैसा ही इस कल्प में रचा है तथा जैसी भूमि या पृथिवी आंखों से प्रत्यक्ष दिखती है, जैसा पृथिवी और सूर्यलोक के बीच में पोलापन है, जितने आकाश के बीच में लोक लोकांतर हैं, उन सबको ईश्वर ने ही रचा है। जैसे अनादिकाल से लोक-लोकांतर को जगदीश्वर बनाया करता है, वैसे ही अब भी बनाये हैं और आगे भी बनावेगा, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान विपरीत कभी नहीं होता, किन्तु ईश्वर के पूर्ण और अनंत होने से सर्वदा एकरस व सर्वज्ञता से युक्त रहता है, उसमें वृद्धि, क्षय और उलटापन कभी नहीं होता। इसी कारण से 'यथापूर्वम-कल्पयत्' इन वेद मंत्र के पदों का ग्रहण किया है।

ईश्वर ने ही अपने सहजस्वभाव से जगत के रात्रि, दिवस, घटिका, पल और क्षण आदि को जैसे पूर्वकल्प में थे वैसे ही रचे हैं। इसमें कोई ऐसी शंका करे कि ईश्वर ने किस वस्तु से जगत को रचा है? उसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने अपने अनन्त ज्ञान व बल की सामर्थ्य से सब जगत को रचा है। ईश्वर के प्रकाश से जगत का कारण प्रकाशित होता है और सब जगत के बनाने की सामग्री अनादि प्रकृति ईश्वर के अधीन है। ईश्वर ने अपनी उसी अनंत ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या के खजाने वेदशास्त्र को प्रकाशित किया, जैसा कि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित किया था और आगे के कल्पों में भी इसी प्रकार से वेदों का प्रकाश करेगा।

जो त्रिगुणात्मक अर्थात सत्य रज और तमो गुण से युक्त है, जिसके नाम अव्यक्त, अव्याकृत, सत्, प्रधान और प्रकृति हैं, जो स्थूल और सूक्ष्म जगत का कारण है, सो भी ईश्वर द्वारा कार्यरूप होके पूर्वकल्प के समान उत्पन्न हुई है। उसी ईश्वर के सामर्थ्य से जो प्रलय के पीछे हजार चतुर्युगी के प्रमाण से रात्रि कहाती है, सो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है। इसमें ऋग्वेद का प्रमाण है कि 'जब-जब सृष्टि विद्यमान होती है, उसके पूर्व सब आकाश अंधकाररूप रहता है और उसी अंधकार में सब जगत के पदार्थ और सब जीव ढके हुए रहते हैं, उसी का नाम महारात्रि है।' तदंतर उसी सामर्थ्य से पृथिवी और मेघ मंडल में जो महासमुद्र है, सो पूर्व सृष्टि के सदृश ही उत्पन्न हुआ है।

अंतरिक्षस्थ समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर, अर्थात क्षण, मुहूर्त, प्रहर आदि काल भी पूर्व सृष्टि के समान उत्पन्न हुआ है। वेद से लेके पृथिवी पर्यंत जो यह जगत है, सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके, सबमें व्यापक होके अंतर्यामिरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़ के सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। ऋषि दयानन्द जी कहते हैं कि ऐसा निश्चित जान के ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, वचन और कर्म से पापकर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है, अर्थात ईश्वर सबके अंत:करण के कर्मों को देख रहा है, इससे पापकर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें। मनुष्य जब इन मंत्रों पर विचार करता है तो उसे अपना अस्तित्व ईश्वर को समर्पित करने में ही अपना हित निश्चित होता है।

प्रेरक वचन

- जीवित माता-पिता की वस्त्र व खान-पान द्वारा श्रद्धा भाव से सेवा करना सच्चा श्राद्ध और तर्पण कहलाता है।
- सच्चा प्रायश्चित पाप को धो डालता है।
- कठिन से कठिन परिस्थिति अपने आने पर निराश नहीं होना चाहिए। प्रभु के दरबार में आशावान बने रहे यह सबकी मनोकामना पूरी करने वाला है।
- बुजुर्गों और माता-पिता का आदर-सम्मान प्रभु भक्ति से भी बढ़कर है।
- बहुत कम बोलो, अधिक बोलने से शक्ति क्षीण होती है, मौन और भी अच्छा है।
- निंदक के शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं अत: इससे बचने के लिए गुण ग्राही बनो।

षोडश कलाएं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी एवं योगेश्वर श्री कृष्ण जी

आचार्य करण सिंह, नोएडा

आर्य संस्कृति विश्व में सर्वाधिक अर्वाचीन है, सनातन अर्थात सबसे पुरातन और प्रथम है। इस संस्कृति में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। परंतु उनमें से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी एवं योगेश्वर श्रीकृष्ण जी इस आर्य संस्कृति के प्राण हैं। उनके विषय में कहावत प्रसिद्ध है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम बारह कलाओं से पूर्ण थे और योगेश्वर श्रीकृष्ण सोलह कलाओं से पूर्ण थे।

आइए पहले हम यह कलाएं ज्ञात करें कि वे कलाएं कौन सी है? प्रश्नोपनिषद में वे षोडश कलाएं इस प्रकार हैं- सः प्राणं असृजत प्राणात् श्रद्धा, खं, वायु, ज्योति, आपः, पृथ्वी, इंद्रियं, मन, अन्नं, वीर्यं, तपः, मंत्राः, कर्म, लोकाः, लोकेषु च नाम च महर्षि पिप्पलाद ने इस प्रकार षोडश कलाओं का वर्णन किया है। महर्षि दयानंद जी ने भी ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में वेद विचार विषय में षोडश कलाओं का वर्णन किया है। जिनका नाम षोडशी है - ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इंद्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, नाम इनको षोडशी कहा जाता है शतपथ ब्राह्मण में भी सोलह कलाओं का वर्णन किया है। जो इस प्रकार से हैं- काम, संकल्प, विचिकित्सा, श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति, अधृति, ह्रीं, घी, भीति, मन, प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, और वाणी, मिलकर सोलह कलाएं होती है।

सूर्य वंश श्री रामचंद्र और द्वादश कलाओं का क्या संबंध है? आइए समझते हैं। महर्षि मनु के पिता विवस्वान थे महर्षि मनु ने अपने पिता विवस्वान के नाम सूर्यवंश की स्थापना की थी, क्योंकि विवस्वान का अर्थ सूर्य होता है, और सूर्य अपने में जब घूमता है, उसकी 12 कलाएं बनती है। उनके एक बिन्दु से दूसरे बिंदु तक जाने का जो अंतराल है उसको एक कला या राशि भी कहते हैं। परंतु इन 12 कलाओं का श्रीरामचंद्र जी के सूर्यवंश से कोई संबंध नहीं है।

हमारे पौराणिक पंडितों ने सूर्य की 12 कलाएं होने के कारण, श्री रामचंद्र जी को सूर्यवंशी होने के कारण उन्हें 12 कलाओं वाला घोषित कर दिया और 12 कलाओं को फलित ज्योतिष से जोड़कर उन बारह राशियों का संबंध वर्णों से जोड़ने दिया । जबकि श्री कृष्ण जी का जन्म चंद्रवंश के यदु राजवंश के वृष्णि उपवंश में हुआ था। चंद्रवंश की स्थापना बुध ने अपने पिता चंद्र के नाम पर की थी चंद्रमा 16 कलाओं में पूर्ण होता है। इसीलिए श्री कृष्ण जी को चंद्रवंशी होने के कारण 16 कलाओं वाला कहा जाता है और पौराणिक पंडितों ने इनमें यह भ्रांति उत्पन्न कर दी है। जबकि दोनों ही महापुरुष इन सोलह कलाओं से पूर्ण थे, कोई भी एक दूसरे से कम नहीं आंका जा सकता। अपने-अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार दोनों ने ही धर्म का कार्य किया और धर्म पूर्वक अपने जीवन का निर्वाह किया। तो चंद्रमा की सोलह कलाओं का भी भौतिक चंद्रमा से कोई दूर तक का संबंध नहीं है। यह चंद्रवंश क्षत्रियों में आता है तो इसी प्रकार हमें इस भ्रांति को अपने मन से दूर कर देना चाहिए। 16 कलाएं जो ऊपर हमने गिनाई हैं। ठीक से जानकर उनका वैज्ञानिक लाभ लेना चाहिए, और उन पर आचरण बनाकर हम भी राम-कृष्ण की तरह अपने जीवन को उच्च कोटि का बनाएं। ताकि हम भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे आप्त पुरुषों की श्रेणी में आ सके। महर्षि दयानन्द जी ने दोनों ही महापुरुषों को आप्त पुरुष कहा है। आप्त पुरुष उसे कहते हैं जिसमें ज्ञान-विज्ञान की पूर्ण आप्ति होती है।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमने सुविधा के अनेकों संसाधन तो जुटा लिये हैं किंतु इस दौड़ में हम अपने आप को भूल गए हैं अथवा यो कहे कि हमने अपने आपको ही खो दिया है प्रतीत ऐसा ही हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का चोला ओढ़े हुए हमने जीवन को यांत्रिक सा बना दिया प्रतीत होता है क्योंकि हमारे जीवन में मधुरता, हर्ष उल्लास, सरलता, सहजता तथा खुशी नष्ट प्राय हो गई है। हमें स्वयं के लिए कोई आभाष ही नहीं है, अपने लिये फुरसत ही नहीं है। किसी से तो क्या अपने सगे संबंधियों से भी मिलने का समय नहीं है। क्या हो गया है हमारी जीवन शैली को। क्या जीवन का बोध कही खो तो नहीं गया है क्योंकि सर्वत्र छटपटा ही दिखाई देती है। हमारी आस्था या यूं कहें कि हमारे इष्टदेव का विश्वास हमें कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हमें जबरदस्त सम्बल देता है, सकारात्मकता से जोड़ता है।

स्वतंत्रता दिवसः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

सर्वे जनाः स्वतंत्रतां वाञ्छति, न कोऽपि पारतंत्रम् इच्छाति। 'सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्' इति वचनानुसारं सर्वेऽपि स्वेच्छया जीवितुं वाञ्छन्ति अस्माकं देशः भारतं गच्छता कालेन बहुदिनं यावत् परतंत्रतानिगड निबद्ध आसीत्। आंग्लशासनशासितो देशः सततं पीड्यमान आसीत्। भारतीया जनाः पशुवत्ताड्यमानाः निरीच्छयापि कार्ये नियोजिता आसन्। परं- भारतभूमिनिवासिनां नेतृणाम्प्रयत्नशतैः प्रसूतः कोऽपि उत्सवोऽस्ति। अस्योत्सवस्य जन्म 1947 खिष्ट्रीयाब्दस्य अगस्तमासस्य 15 तारिकायामभूत्। भारतीयेतिहासस्य स्वर्णिमों दिवसोऽयं सवैरेकमतेन स्वीकृतः। एतस्मिन् दिवसे भारतः चिरकालिक परतंत्रतापाशान्मुक्तः।

तद्दिनाद् भारतीयैः सह भारतभूमिः सुखिनी जाता। एषः 15 अगस्त दिवसः अस्माकं भारतीयानां त्यागस्य दिवसः पुण्यस्य च परिचायकोऽस्ति, यैः स्वकीयराष्ट्रस्य स्वतंत्रतायै ऐहलौकिक पारलौकिकश्च सुखं परित्यक्तम्। इतः पूर्व भारतीयैः परचक्रोद्भवानि वाङ्मनोऽतीतानि कष्टानि सोढानि। वीरैः सोत्साहं देशस्य स्वतंत्रतायै प्राणास्तृणवद् आहुतीकृताः।

तस्यैव फलमासीद् यदद्यदेशः सर्वथा स्वतंत्रः। यः कश्चिदपि अत्र आक्रामितुम् अभिलषति, स एव पराजयम्प्राप्य इतः पलायते। यः प्रथमः स्वतंत्रता दिवसः आसीत्तस्य आयोजनस्य चतुर्थशतारिकात एव देशकर्णधारकैः स्थाने-स्थाने कदलीवृक्षैः द्वाराणि निर्मापितानि राजमार्गस्य उभयतः तोरणानि रचितानि। तेषु द्वारेषु गान्धिद्वारम्। जवाहरद्वारम्, आजादद्वारम्, भारतमातुद्वारम्, स्वतंत्रता द्वारं इत्यादिपदानि लिखितानि आसन्। यैः जनतायाः समक्ष ग्रामे ग्रामीणैः नागरिकैश्च स्वानि स्वानि ग्रहाणि सज्जीकृतानि। वाटिकाः वाष्यश्च सुसज्जिताः। रात्रौ स्वतंत्रतादेव्या आवाहनादिकं कृतम्, कीतिनानि आयोजितानि। शंखघंटाध्वनिभिः रामायण कथा प्रारब्धा गीताऽपि गीता। सर्वतः जयजयेतिशब्दस्य गगनचुम्बिसमुद्घोषः मुखरितः।

अगस्तस्य पञ्चदश दिनांके प्रातःकालादेव जनसमुदायः सर्वत आगत्य भारत स्वतंत्रता-गीतानि तारस्वरेण गायंतो सानन्दाः समभूवन्। मध्ये-मध्ये नेतृणां जयध्वनिं कुर्वन्तिस्म। इत्थं प्रातर्भ्रमणानन्तरं सार्द्धदशवादनबेलायां राष्ट्रध्वजोत्तोलनमकारि तदानीन्तमैरधिकारिभिः। अस्मिन्नवसरे बालाः, बालिकाः, युवानः, युवतय, वृद्धाश्च उत्साहेन परिपूर्णताः गोप्यो रासलीलायामिव समवेताः सञ्जाता। ततः सायंसमये सार्वजनिकसभाः समायोजिताः वक्तृभिः देशभक्ति भावना समृद्धैर्भाषणैः जनता सम्बोधिता। सर्वेभ्यः दिवङ्गतमहापुरुषेभ्यः श्रद्धाश्चलयः समर्पिताः। रात्रो दीपमालिकाभिः गृहाणि सुसज्जितानि। इत्थश्च स्वतंत्रतादिवसः स्मरणीयराष्ट्रियपर्वः, यो भारतवासिनां त्यागस्य बलिदानस्य परोपकारस्य अहिंसायाः सत्यस्य च पाठं पाठयति चिरकालं यावत्।।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **ईश्वर-** जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनंत आदि सत्यगुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनंदी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाए, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना है, उसको 'ईश्वर' कहते हैं।
- **धर्म-** जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए मानने योग्य है, उसको 'धर्म' कहते हैं।

15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस

सदियों की गुलामी के पश्चात 15 अगस्त 1947 के दिन आजाद हुआ। पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे। उनके बढ़ते हुए अत्याचारों से सारे भारतवासी त्रस्त हो गए और तब विद्रोह की ज्वाला भड़की और देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाईं और अंतत: आजादी पाकर ही चैन लिया। इस दिन हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। अंग्रेजों के अत्याचारों और अमानवीय व्यवहारों से त्रस्त भारतीय जनता एकजुट हो इससे छुटकारा पाने हेतु कृतसंकल्प हो गई। सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद ने क्रांति की आग फैलाई और अपने प्राणों की आहुति दी। तत्पश्चात सरदार वल्लभभाई पटेल, गांधीजी, नेहरूजी ने सत्य, अहिंसा और बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी। सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां खाईं, कई बार जेल गए और अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए 'स्वर्णिम दिन' बना। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए। यह दिन 1947 से आज तक हम बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, राष्ट्रगीत गाया जाता है और इन सभी महापुरुषों, शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है जिन्होंने स्वतंत्रता हेतु प्रयत्न किए। मिठाइयां बांटी जाती हैं। हमारी राजधानी दिल्ली में हमारे प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। वहां यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है। सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। इसलिए हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न कि बाधक। घूस, जमाखोरी, कालाबाजारी को देश से समाप्त करें। भारत के नागरिक होने के नाते स्वतंत्रता का न तो स्वयं दुरुपयोग करें और न दूसरों को करने दें। एकता की भावना से रहें और अलगाव, आंतरिक कलह से बचें। हमारे लिए स्वतंत्रता दिवस का बड़ा महत्व है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा रचित गीता : एक दिव्य संदेश

एक संक्षिप्त काव्य के रूप में- ''कर्म योग है पावन गीता, भव, भय, ताप, नशावन गीता। नौका की पतवार है गीता, जगती से उद्धार है गीता। मृत्यु विराम नहीं जीवन का, है निष्काम कर्म का दर्शन। जिससे हो न स्वार्थ का बंधन, कर्म योग है पावन गीता। भव, भय, ताप, नशावन गीता॥''

अर्थात् यह पवित्र गीता का उपदेश कर्मयोग है अथवा यूं कहें कि कर्मक्षेत्र है जो कि प्रत्येक प्राणी का अलग-अलग होता है। अध्यापक का विद्यालय में शिक्षण कार्य, कृषक का खेत खलिहान, विद्यार्थी का पठन क्षेत्र, व्यापारी का कर्मक्षेत्र उसका व्यवसाय, एकाउंटेंट का लेखा-जोखा करना, ये सब उनके कर्मक्षेत्र नहीं तो और क्या है ?

गीता के अनुसार एक पल भी प्राणी कर्म किए बिना नहीं रहता। यहां तक कि श्वास लेना एवं छोड़ना यह भी कर्म ही है, अगर इसमें बाधा आने लगे तो उसके उपाय के लिए भी प्राणी व्याकुल हो उठता है। वास्तव में जिंदगी एक संघर्ष है। बुराई और भलाई, पाप-पुण्य, हानि-लाभ इत्यादि का युद्ध क्षेत्र है। यह चलता ही रहता है। इसीलिए श्रीकृष्ण जी कहते हैं क 'तस्मात् सर्वेषु कालेषु काम अनुस्मर' अर्थात् प्रत्येक पल मेरा ही स्मरण रखो। महाभारत के युद्ध क्षेत्र में 'कौरव सौ थे और पांडव पांच' कहने का तात्पर्य यह है कि दुनियां में बुरे लोग अधिक होते हैं और भले लोग कम। परंतु हमें स्मरण रखना चाहिए कि बुराई पर हमेशा भलाई की, असत्य पर सत्य की ही विजय होती है। क्योंकि जब प्राणी 'गीता के रचयिता श्रीकृष्ण को' अपनी जीवन रूपी नौका की पतवार मान लेते हैं तो उनके समस्त सांसारिक भौतिक भय एवं दुखों का नाश स्वयं ही होने लगता है। यदि हम प्रभु की शरण में अपना सर्वस्व त्यागकर जीवन में आगे बढ़ते हैं तो परमात्मा हमेशा छाया की तरह हमारे साथ ही रहते हैं। मनुष्य ही इसे समझ नहीं पाता और वह अहंकार के नशे में स्वयं का कर्ताधर्ता मानने लगता है। गीता में लिखा है कि मृत्यु जीवन का विश्राम नहीं है। मृत्यु के भय से, भाग्य के सहारे हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं तो ईश्वर भी उससे दूर हो जाते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने अपने उपदेश में कहा है कि ए मानव! निष्काम कर्म किये जा जिससे तू संसार के मोहपाश में न उलझकर पुरुषार्थ करता रह और आगे बढ़ता जा। सफलता तेरे पांव चूमेगी। गीता के द्वितीय अध्याय के अंत में 12 श्लोकों में स्थिर प्रज्ञ के लक्षण बताएं हैं। उदाहरणत: 'विहाय कामान्य: सर्वान्दुमांश्चरति नि:स्पृह:। निर्ममो निरहङ्कार स शांतिमधि गच्छति॥ अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकार रहित और स्पृहारहित होकर विचरता है वही शांति को प्राप्त होता है अर्थात् ब्रह्मानंद को प्राप्त कर लेता है। (गीता अध्याय 2-71 श्लोक)

नेताजी : सुभाषचन्द्र बोस

पुण्यतिथि : 18 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

सुभाष चन्द्र बोस (जन्म : 23 जनवरी 1897, मृत्यु : 18 अगस्त 1945) जो नेता जी के नाम से भी जाने जाते हैं, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की थी तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें ख़त्म करने का आदेश दिया था। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमांडर' के रूप में सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो! का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली और आयरलैंड ने मान्यता दी। नेताजी की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है। जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है वहीं भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाषचन्द्र बोस की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नज़रबंद थे।

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

पुण्यतिथि : 23 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म 9 नवम्बर 1889 को पंजाब के जालंधर जिले के नवां शहर में हुआ था। आप स्वामी श्रद्धानंद जी के सुपुत्र थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। अध्ययन के समय ही उन्हें सद्धर्म प्रचारक के सम्पादन का मौका मिला। यहीं से उनकी प्रवृति पत्रकारिता की ओर गयी। अपने जीवनकाल में उन्होंने विजय, वीर अर्जुन तथा जनसत्ता का सम्पादन किया। 'विजय' दिल्ली से प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी समाचार पत्र था। इनका देहावसान 23 अगस्त 1960 को दिल्ली में हुआ। इन्द्र जी ने शिक्षा तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान गुरुकुल कांगड़ी का संचालन एवं मार्गदर्शन है। इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने गुरुकुल की उपाधियों को केन्द्र एवं राज्य सरकारों से मान्यता प्रदान कराने का स्तुत्य एवं सफल कार्य किया। गुरुकुल में हिन्दी माध्यम से तकनीकी विषयों की शिक्षण की व्यवस्था करके इन्होंने हिन्दी की अमूल्य सेवा की। ये इतिहास के गंभीर अध्येता थे। अत: इनकी इतिहास-विषयक रचनाएं अत्यन्त प्रामाणिक एवं उच्च श्रेणी की मानी गयीं हैं। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अन्त, मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, मराठों का इतिहास उनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएं हैं।

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

पुण्यतिथि : 23 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय आर्य समाजी लेखक थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मेरठ कॉलेज के प्रोफेसर और गढ़वाल जिले के तेहरी में मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया, जिसमें से वह आर्य समाज पूर्णकालिक सेवा करने के लिए सेवानिवृत्त हुए। आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, दार्शनिक तथा साहित्यकार पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म 6 सितमबर 1881 को एटा जिले के नदरई नामक ग्राम में श्री कुंज बिहारीलाल के यहां हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में क्रमश: 1908 तथा 1912 में किया। प्रारंभ में कुछ समय तक राजकीय स्कूलों में अध्यापन किया किंतु 1918 में वहां से त्यागपत्र देकर डीएवी हाई स्कूल इलाहाबाद में मुख्याध्यापक के पद पर आ गये। 1936 में इस कार्य से अवकाश लेने के पश्चात उपाध्याय जी ने सम्पर्ण जीवन को आर्य समाज के लिए ही समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद पर 1941 से 1944 पर्यंत रहे। तत्पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान (1943) तथा (1946-1951) भी रहे। इसी बीच आप धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड व सिंगापुर गये। 1959 में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में आपका सार्वजनिक अभिनंदन किया गया तथा अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया। अत्यंत वृद्ध हो जाने पर भी आप निरंतर अध्यन व लेखन में लगे रहे। 29 अगस्त 1968 को आपका निधन हो गया।

अमर बलिदानी बालक वीर हकीकत राय

पंजाब के सियालकोट में 1719 में जन्में वीर हकीकत राय जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। बड़े होने पर आपको उस समय कि परम्परा के अनुसार फारसी पढ़ने के लिये मौलवी के पास मस्जिद में भेजा गया। वहां के कुछ शरारती मुस्लमान बालक हिन्दू बालकों तथा हिन्दू देवी-देवताओं को अपशब्द कहते रहते थे। बालक हकीकत उन सबके कुतर्कों का प्रतिवाद करता और उन मुस्लिम छात्रों को वाद-विवाद मे पराजित कर देता।

एक दिन मौलवी की अनुपस्थिति में मुस्लिम छात्रों ने हकीकत राय को खूब मारा पीटा। बाद मे मौलवी के आने पर उन्होंने हकीकत की शिकायत कर दी कि उन्होंने मौलवी के यह कहकर कान भर दिए कि इसने बीबी फातिमा को गाली दी है। यह सुनकर मौलवी नाराज हो गया और हकीकत राय को शहर के काजी के सामने प्रस्तुत कर दिया।

बालक के परिजनों के द्वारा लाख सही बात बताने के बाद भी काजी ने एक न सुनी और शरिया के अनुसार दो निर्णय सुनाये एक था सजा-ए-मौत है या दूसरा था इस्लाम स्वीकार कर मुसलमान बन जाना। माता-पिता व सगे संबंधियों ने हकीकत को प्राण बचाने के लिए मुसलमान बन जाने को कहा मगर धर्मवीर बालक अपने निश्चय पर अड़िग रहा और बंसत पंचमी 20 जनवरी 1734 को जल्लादों ने 12

वर्ष के निरीह बालक का सर कलम कर दिया। वीर हकीकत राय अपने धर्म और अपने स्वाभिमान के लिए बलिदानी हो गया और जाते जाते इस हिन्दू कौम को अपना संदेश दे गया। वीर हकीकत कि समाधि उनके बलिदान स्थल पर बनाई गई जिस पर हर वर्ष उनकी स्मृति में मेला लगता रहा।

1947 के बाद यह भाग पाकिस्तान में चला गया परंतु उसकी स्मृति को अमर कर उससे हिन्दू जाति को संदेश देने के लिए डॉ. गोकुल चांद नारंग ने उनका स्मारक यहां पर बनाने का आग्रह अपनी कविता के माध्यम से इस प्रकार से किया हैं।

हकीकत को फिर ले गए कत्लगाह में हजारों इकट्ठे हुए लोग राह में।

चले साथ उसके सभी कत्लगाह को हुयी सख्त तकलीफ शाही सिपाह को।

किया कत्लगाह पर सिपाहियों ने डेरा हुआ सबकी आंखों के आगे अंधेरा।

जो जल्लाद ने तेग अपनी उठाई हकीकत ने खुद अपनी गर्दन झुकाई।

फिर एक वार जालिम ने ऐसा लगाया हकीकत के सर को जुदा कर गिराया।

उठा शोर इस कदर आहो फुंगा का के सदमे से फटा पर्दा आसमां का।

मची सख्त लाहौर में फिर दुहाई हकीकत की जय हिन्दुओं ने बुलाई।

बड़े प्रेम और श्रद्धा से उसको उठाया बड़ी शान से दाह उसका कराया।

तो श्रद्धा से उसकी समाधी बनायी वहां हर वर्ष उसकी बरसी मनाई।

वहां मेला हर साल लगता रहा है दिया उस समाधि में जलता रहा है।

मगर मुल्क तकसीम जब से हुआ है वहां पर बुरा हाल तबसे हुआ है।

वहां राज यवनों का फिर आ गया है अंधेरा नए सर से फिर छा गया है।

अगर हिन्दुओं में है कुछ जान बाकी शहीदों बुजुर्गों की पहचान बाकी।

शहादत हकीकत की मत भूल जाएं श्रद्धा से फूल उस पर अब भी चढ़ाएं।

कोई यादगार उसकी यहां पर बनायें वहां मेला हर साल फिर से लगायें।

■■ डॉ. विवेक आर्य

क्रांतिकारियों के मार्मिक किस्से

राहुल आर्य

दिन 28 मई 1930 रावी के तट पर भगवती चरण वोहरा, सुखदेव राज और वैशम्पायन बम बनाकर उसके परीक्षण के लिए पहुंचे। क्योंकि भगत सिंह व अन्य साथियों को जेल से छुड़ाने की योजना पर काम चल रहा था। सुखदेव राज ने भगवती को आगाह कर कहा–भैया बम की पिन ढीली है...भगवती बोले...कुछ नहीं मुझे दो...तुम पिछे हटो मैं देखता हूं...भगवती ने पिन निकाली... आह... और बम हाथ में ही फट गया...सारा शरीर झुलस गया... मगर चेहरे पर मुस्कान थी।

अब देखिए उस क्रांतिकारी ने क्या कहा- भगवती ने सारी ताकत इकठ्ठी कर कहा...विश्वनाथ मेरी मौत भगत और दत्त को छुड़ाने में बाधक नहीं होनी चाहिए। अपनी भाभी का ख्याल रखना, ये अंतिम शब्द थे उस महान क्रांतिकारी के जिसने गांधी को Philosophy Of Bomb नामक दस्तावेज लिखकर क्रांतिकारियों की ओर से जवाब दिया था। भगवती चरण वोहरा को अग्नि भी नसीब नहीं हो पायी। पुलिस और सीआईडी के डर से उन्हें जंगल में ही दफनाया गया। मगर इस महान क्रांतिकारी की मिट्टी की दुर्गति यहीं नहीं रुकी। एक दल के सदस्य इंद्रपाल के मुखबिर हो जाने से उनकी अस्थियां खोदकर सबूत के तौर पर अदालत में पेश की गई। उसी क्रांतिकारी की पत्नी का नाम था दुर्गा देवी जो इतिहास में दुर्गा भाभी के नाम से जानी जाती हैं।

28 मई को भगवती चरण शहीद हुए और 1 जून को भगत व दत्त को छुड़ाने के लिए काफिला तैयार हो गया। आजाद, धंवनतरी, वैश्मपायन, मदन गोपाल, ड्राइवर टहल सिंह लाहौर जेल की ओर निकलने को तैयार थे। आह...जिस देवी के पति को 3 दिन पहले मौत ने निगल लिया हो। उस दुर्गा देवी ने अपनी उंगली काटकर खून से सबको तिलक किया। पति ने जो कहा था कि मेरी मौत भगत और दत्त को छुड़ाने में बाधा नहीं बननी चाहिए। उस देवी ने अपने आंसुओं को सुखा लिया और आसुओं की जगह खून से काम लिया। सांडर्स की हत्या की जा चुकी थी...भगत सिंह को लाहौर से बाहर निकालना था, दुर्गा देवी ने अपने एकलौते बेटे शशि को गोद में उठाया. घर में 1000 रुपए थे वो भगत सिंह को दिए और उनकी पत्नी बनकर उनको कलकत्ता सेठ चौधरी छाजूराम लाम्बा की हवेली तक छोड़कर आई। पति भगवती चरण पहले ही एक केस में फरार थे, उस देवी ने खुद को और नन्हें से बेटे को भी दांव पर लगा दिया।

अब एक महिला की उस देवी से थोड़ी तुलना कर देता हूं, विजय लक्ष्मी पंडित नाम की महिला जवाहरलाल नेहरू की छोटी बहन थी, जब वो लखनऊ सेंट्रल जेल में गई तो उनके लिए एक अलग से कमरा बनवाया गया, उस कमरे में रंग-रोगन विजय लक्ष्मी की पसंद का करवाया गया। उनको अंग्रेजी टाइप के भोजन की व्यवस्था की गई और तो और विजय लक्ष्मी जी लखनऊ जेल में रहते रहते जेल आईजी के साथ जेल से बाहर आकर अंग्रेजी फिल्में तक देख आती थी। आजादी के बाद विजय लक्ष्मी राजदूत बनाई गई और दुर्गा देवी दो वक्त की रोटियों के जुगाड़ में शहर दर शहर फिरती रहीं। दुर्गा देवी के ससुर भगवती चरण वोहरा के पिताजी रेलवे में बड़े ओहदे पर थे। राय साहब की उपाधि भी मिली हुई थी। दुर्गा देवी के पिताजी भी सरकारी नौकरी पर थे। ससुर ने उस वक्त बहू को 40,000 रुपए दिए थे। कई शहरों में तीन मंजिला मकान भी थे। यदि पति-पत्नी चाहते तो बड़े आराम सुख-सुविधाओं में जीवन काट सकते थे मगर उन्होंने सब कुछ क्रांति और क्रांतिकारियों पर खर्च कर दिया।

ऋषि दयानन्द के अनमोल वचन

- जो मनुष्य ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह महामूर्ख होता है।
- 'यथा राजा तथा प्रजा' इसलिए राजा तथा राजपुरुषों को चाहिए कि दुष्टाचार न करें।
- मेरा कोई नवीन कल्पना या मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। मैं अपना मत उसी को जानता हूं कि जो तीनों काल में सबको एकसा मानने योग्य हो।
- मनुष्य अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

श्रावणी हमें क्या चिंतन देती है

■ स्व. महात्मा चैतन्यमुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुखों का कारण माना गया है इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेक बनाने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रंथ है क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अंधकार डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतंजलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुखों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शांति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि 'वेदों की ओर लौटो।'

वेद स्वयं ही ज्ञान पर्याय है अत: अज्ञानांधकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितांत अनिवार्य है। वेद का मनन-चिंतन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालांतर में लुप्त प्राय होती चली गई, मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्य समाज संस्था की यह विशेषता है कि वह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुल्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते चले जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकता में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है। जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अंतत: तृप्ति देने वाले नहीं हैं। इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरंतर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वही तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है, अतृप्त है, रो रहा है, तड़प रहा है मगर पुन: भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है।

उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है कि मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को संबोधित करते हुए मानों वेद कहता है-

अन्ति सन्तं जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

अर्थ. 10.8.32

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परमपिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है। इस मंत्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनंद नहीं है। यदि वास्तविक आनंद का पान करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है।

तुलनात्मक अध्ययन

ईश्वरीय विज्ञान वेद, आधुनिक विज्ञान, मत-मतान्तर (हिन्दुओ में जातिवाद, छुआछूत, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, राधास्वामी, जयगुरुदेव आदि)

कुछ शब्द जो प्रचलन में है उनको समझते है- आधुनिक वैज्ञानिक किसी खास पदार्थ को गहराई से जानने वाला। जैसे- आंख के विशेषज्ञ डॉक्टर-अब उन डॉक्टर से पूछो की आप आंख के बारे में सबकुछ जानते हो, वह मना ही कर देगा, बोलेगा कि सब कुछ तो नहीं जनता, बहुत कुछ जानता हूं, उसकी बात भी सही है यदि सब कुछ जान लेता तो नई आंख ही बना देता, आज विश्व में करोड़ों लोग अंधेपन के शिकार हैं। वे सभी ठीक हो चुके होते। अब दूसरा उदाहरण लेते है कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने रासायनिक खाद बनाई-फसल तो अधिक हो सकती है परंतु इस तरह के भोजन से प्राणीजगत बीमार हो रहा है, इसका मतलब वो भी रासायनिक खाद के बारे सब कुछ नहीं जानते, यदि जानते तो जहरीला भोजन तैयार ही नहीं होता।

इनसे अर्थ निकला कि जो गहराई से किसी खास पदार्थ को जानता है जबकि पूर्ण नहीं जानता, उसी को आधुनिक वैज्ञानिक कहते है, आधुनिक वैज्ञानिक अनेक हुए है जैसे आइंस्टीन, फाइनमेन, स्टेफीन हाकिंग आदि।

अब यहां हमने आधुनिक वैज्ञानिक के बात कर रहे है जो पूरा नहीं जानते, अब हमें ये तो देखना है कि आंख तो बनी है, जो पूरा जनता है वही आंख बना सकता है, मतलब कोई ना कोई है जो आंख के बारे में सम्पूर्ण जानता है, अब हम आगे उसी कि बात करते है जिसने आंख के अलावा भी पूरी सृष्टि बनाई। जैसे हमने उपरोक्त वैज्ञानिक कि परिभाषा बताई, जो बहुत कुछ जनता परंतु पूर्ण नहीं। अब जो सब कुछ जानता है उसको हम महान वैज्ञानिक ईश्वर कह रहे है। अब इन महान वैज्ञानिक ईश्वर का ग्रंथ है वेद विज्ञान, जिसमे समस्त सृस्टि कैसे बनायी, इसको उपयोग करने कि पूर्ण विधि दी है। वेद में दोनों विद्या-पदार्थ एवं आध्यात्मिक विद्या कि पूर्ण जानकारी दी है और ये भी निर्देश दिया है कि मुझे केवल पदार्थ विद्या के द्वारा जाना जा सकता है जैसे कार्य को देखकर कार्य करने वाले कि महत्ता समझी जा सकती है। बिना पदार्थ विद्या के ईश्वर को जाना ही नहीं जा सकता यदि ऐसे कोई कर रहा है तो वह अज्ञानी ही है।

दोनों विद्या के बल पर ही हमारे ऋषि मोक्ष को प्राप्ति करते थे और पदार्थ विद्या का ज्ञान आम आदमी को दे देते थे। हमारे ऋषियों ने इस पदार्थ विद्या के बल पर गुड़, मिटटी के बर्तन, कच्ची मिटटी के घर, रसोई, वैदिक कृषि, वैदिक चिकित्सा आदि दी है। अब इन महान वैज्ञानिक के ग्रन्थ तो कठिन संस्कृत में है। उसको ब्राह्मण ग्रन्थ, व्याकरण आदि पढ़कर और समाधि में जाकर समझा जा सकता है, ये ऋषियों का कार्य है, आम आदमी इसको समझ ही नहीं सकते। इन्हीं ऋषिकृत वेद भाष्य हिंदी को मैं दो वर्ष से पढ़ रहा हूं। उसके आधार पर आंख के अलावा भी सभी रोग हम ठीक कर रहे हैं, मैंने कोई 15 वर्ष डॉक्टरी का कोर्स नहीं किया है, केवल वेद पढ़े हैं। वेद विद्या के आधार पर हम बहुत कार्य कर रहे है, चिकित्सा का तो मैंने एक उदाहरण दिया है। वेद में पूर्ण ज्ञान दिया है, उसको हमें समझना है, उसकी आरती नहीं उतारनी है। जो आधुनिक वैज्ञानिक के अनुसंधान है उनका हम जीवन में उपयोग ले रहे है ना कि उन सिद्धांत आरती उतार रहे हैं। एक साधारण वैज्ञानिक है एक महान वैज्ञानिक है। इन दोनों में ही तुलना हो सकती है। तुलना हमेशा बराबर वालों में होती है। ऐसे तुलना नहीं होती एक भैंस है दूसरा खेत। भैंस कि तुलना भैंस से और खेत कि तुलना खेत से हो सकती है।

अब आओ उपरोक्त दोनों वैज्ञानिक, आधुनिक वैज्ञानिक एवं महान वैज्ञानिक कि तुलना मत-मतान्तर से करते है। आप ही बताओ आधुनिक वैज्ञानिक केवल पदार्थ विद्या का गहराई का अनुसंधान करते है और महान वैज्ञानिक ने पदार्थ, आध्यत्मिक दोनों का पूर्ण ज्ञान मानव उत्पत्ति के साथ दे दिया है, जबकि मत-मतान्तर वालों ने केवल मानव में भेद करके अपने गिरोह, अपनी कमाई के लिए बनाये है, जिससे इनको बिना परिश्रम धन मिलता रहे। विज्ञान और मत-मतान्तर कि तुलना नहीं हो सकती, यदि कोई करता है तो वह खुद अज्ञानी है। आज बहुत आर्य समाज मंदिर भी अपने विज्ञान को छोड़कर शादी के बारात घर बन चुके है। किसी भी आर्य समाज मंदिर में विज्ञान तो है ही नहीं, यदि होता तो इनके आर्य विद्वान अल्पायु में ना मरते। मेरा आर्य विद्वानों से निवेदन है कि वे भी वेद का विज्ञान समाज को बताये, तभी हम ऋषियों के ऋण से मुक्त हो सकते है।

राकेश उपाध्याय

Some aspects of Vedic Dharma and Culture

Article By S.L. Sharma, Bangalore Arya Samaj

An Arya is any person who believes in and worships the one true God, who lives according to the teachi…ngs of the Vedas, who follows the dictates of Dharma, and who strives to spread the Light of Truth to all people. Being an Arya is a spiritual and moral condition of an individual, and is in no way determined by external factors such as race or nationality. An Arya is a person who is, above all else, devoted to Truth.

An Arya worships and communes with the one true God daily through the performance of Sandhya and Agnihotra and lives according to the 10 Principles of Dharma (righteousness), namely : steadfastness (dritih), tolerance (kshamaa), contentment (damah), non-covetousness (asteyam), cleanliness (showcham), restraint of the senses (indriya nigrahah), practice (dheeh), knowledge (vidyaa), truth (satyam) and benevolence (akrodhah). An Arya does not consume meat, use intoxicants or recreational drugs of any kind, or indulge in sex outside of marriage.

God Soul And Nature : According to Vaidika Dharma, God (OM), the Soul (Purusha) and Nature (Prakriti) are the 3 Eternal Noumena, meaning that they have always existed and will forever continue to exist. Though later thinkers developed a number of varying metaphysical positions, the philosophy of the Vedas, the original Divine Revelation, clearly posits the beginningless existence of God, the Soul and Nature – an eternal truth that has come to be referred to as Traita or Traitavada, meaning the 'Wisdom of the Three'.

However, though God, the Soul and Nature are three distinct entities, they are at no time completely separate from one another. The relationship between God and Creation is that between the Pervader and that which is pervaded, respectively. God fills and pervades every corner of existence, including the eternal Soul of man.

The relationship between God and man, therefore, is more intimate than any other relationship an individual shall ever experience. Indeed, God knows all our thoughts and desires, our hopes and dreams, our fears and worries. He is our Eternal Father, our Highest Master, our True Friend, Teacher and Guide in one.

The Purusharthas : The Ends of Noble Society The Purusharthas are the goals of earthly life. It is towards these ends that any noble society strives. They are four in number : 1. Dharma or Duty : This is the state in which one's actions, serving the good of all, are in accordance with one's own nature. Thus, to practice Dharma is to establish congruence and harmony between one's inner and outer life.

Swami Dayanand on Dharma : "The practice of equitable justice together with that of truthfulness in word, deed and thought and the like (virtues) – in a word, that which is in conformity with the Will of God, as embodied in the Vedas – even that I call Dharma. But the practice of that which is not free from partiality and injustice as well as of untruthfulness in word, deed and thought, – in a word, that which is opposed to the Will of God, as embodied in the Vedas – even that I term Adharma (unrighteousness)."

तू कर ओ३म् का जाप

तू कर ओ३म् का जाप, शक्ति मिलेगी।
तू कर वेद का पाठ, लक्ष्मी मिलेगी॥
रहेगी न मन में तेरे कोई चिन्ता।
रहेगी न मन में तेरे कोई शंका॥
हृदय में तेरे एक ज्योति जलेगी- तू कर ओ३म्...

मिटेंगे अंधेरे मिलेंगे उजारे।
तेरे भाग्य में चमकेंगे फिर सितारे॥
झुकेगा यह आकाश धरती झुकेगी- तू कर ओ३म्...

भरेगा तेरा दिव्यताओं से जीवन।
उन्हीं सदगुणों से बनेगा यह वन्दन॥
नमन तुझको यह सारी दुनिया करेगी- तू कर ओ३म्...

तेरा तार जब उस प्रभु से जुड़ेगा।
कोई दुःख तुझे न दुःखी कर सकेगा॥
इक आभा सदा तेरे मुख पे रहेगी- तू कर ओ३म्...

पिता है तेरा वह ही और वह ही माता।
है इस सारे संसार का वह विधाता॥
सदा उसकी अनुकम्पा तुझको मिलेगी- तू कर ओ३म्...

अगर कोई मुश्किल घड़ी आ भी जाये।
तू कर याद उसको बनेगा सहाय॥
तेरे मन की बगिया पुनः खिल उठेगी- तू कर ओ३म्...

हैं दुख-सुख तो जीवन में आते व जाते।
हैं वह देव सुख में भी जो मुस्कराते॥
तू खुश रह तुझे भी वह पदवी मिलेगी- तू कर ओ३म्...

➲ साभार : चरित्रवान

सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना, यदि जन-जन में प्यारा हो जाये।
पढ़कर के सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जाये॥
फूले फुलवाड़ी वेदों की, जग से अंधियारा मिट जाए।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जग बन जाए॥

➲ आर्य राजेन्द्र

सोई कौम को जगाया

सोई कौम को जगाया स्वामी दयानन्द ने।
चमत्मार था दिखाया स्वामी दयानन्द ने॥

खुद तो ईंटें पत्थर खाये खंजर बरछी भाले
सोलह-सत्रह बार ऋषि ने पिये ज़हर के प्याले
सबको अमृत ही पिलाया स्वामी दयानन्द ने।

उजड़ गया था बाग हमारा सूखी डाली-डाली
टंकारा का वह संन्यासी आ गया बन के माली
फिर से बाग को महकाया स्वामी दयानन्द ने॥

आसमान को देख-देख कर दुःखी आत्मा तरसी
प्यासे मन की प्यास बुझाने बूंद कोई न बरसी
बादल वेदों का बरसाया स्वामी दयानन्द ने॥

लावारिस लाचार बनी बैठी थी अबला नारी
अन्दर का विश्वास जगाया हिल गई दुनिया सारी
ऊंचे आसन पे बिठाया स्वामी दयानन्द ने॥

पिछड़े हुए समाज के अंदर आ गई नई बहारें
छुआछूत और जातपात की तोड़ गया दीवारें
चक्कर शुद्धि का चलाया स्वामी दयानन्द ने॥

कितनी सदियां बीच गई हैं गिरते और संभलते
पथिक मिली न मंजिल कोई राह पे चलते-चलते
सीधा रास्ता बताया स्वामी दयानन्दने॥

आपने मेरे स्वामी बड़ा उपकार किया है।
कोई हुई इस कौम को बेदार किया है॥
आपको चमत्कार में विश्वास नहीं था।
लेकिन जो किया है वह चमत्कार किया है॥

➲ आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

श्रावणी पर्व की महत्ता

श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को रक्षाबंधन का पर्व आयोजित किया जाता है। इसीलिए श्रावणी भी कहते हैं। सावन मास श्रावण का परिवर्तित नाम है। इस मास की वैदिक महत्ता ऋषि मुनियों के समय से प्रचलित है। विक्रमी संवत के अनुसार श्रावण पांचवा मास है। प्राचीन काल में श्रवण मास को जीवन का अभिन्न अंग समझा जाता था। कालांतर में विदेशी संस्कृति के प्रचार से जनमानस इसे भूल गया है। श्रावणी पर्व के तीन लाभ है- आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं सामाजिक।

आध्यात्मिक पक्ष : श्रावण का अर्थ होता है जिसमें सुना जाये। अब सुना किसे जाता है। संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण ईश्वरीय ज्ञान वेद है। इसलिए इस मास में वेदों को सुना जाता है। श्रावण में गर्मी के पश्चात वर्षा आरम्भ होती है। वर्षा में मनुष्य को राहत होती है। चित वातावरण के अनुकूल होने के कारण शांत हो जाता है। मन प्रसन्न हो जाता है। वर्षा होने के कारण मनुष्य अधिक से अधिक समय अपने घर पर व्यतीत करता है। ऐसे अवसर को हमारे वैज्ञानिक सोच रखने वाले ऋषियों ने वेदों के स्वाध्याय, चिंतन, मनन एवं आचरण के लिए अनुकूल माना। इसलिए श्रावणी पर्व को प्रचलित किया। वेदों के स्वाध्याय एवं आचरण से मनुष्य अपनी आध्यात्मिक उन्नति करे। यही श्रावणी पर्व का आध्यात्मिक प्रयोजन है।

वैज्ञानिक पक्ष : श्रावण में वर्षा के कारण कीट, पतंगे से लेकर वायरस, बैक्टीरिया सभी का प्रकोप होता हैं। इससे अनेक बीमारियां फैलती है। प्राचीन काल से अग्निहोत्र के माध्यम से बिमारियों को रोका जाता था। श्रावण मास में वेदों के स्वाध्याय के साथ साथ दैनिक अग्निहोत्र का विशेष प्रावधान किया जाता

है। इसीलिए वेद परायण यज्ञ को इसमें सम्मिलित किया गया था। इससे न केवल श्रुति परम्परा को जीवित रखते वाले वेद-पाठी ब्राह्मणों का संरक्षण होता है अपितु वेदों के प्रति जनमानस की रुचि में वृद्धि भी होती है। श्रावणी पर्व का वैज्ञानिक पक्ष पर्यावरण रक्षा के रूप में प्रचलित है।

सामाजिक पक्ष : श्रावण मास में वर्षा के कारण संन्यासी, वानप्रस्थी आदि वन त्यागकर नगर के समीप स्थानों पर आकर वास करते है। गृहस्थ आश्रम का पालन करने वाले लोग अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए महात्माओं का सत्संग करने के लिए उनके पास जाते है। महात्माओं के धर्मानुसार जीवन यापन, वैदिक ज्ञान, योग उन्नति एवं अनुभव गृहस्थियों को जीवन में मार्गदर्शन एवं प्रबंध में लाभदायक होता हैं। श्रवण पर्व का सामाजिक पक्ष ज्ञानी मनुष्यों द्वारा समाज को दिशा-निर्देशन एवं धर्म भावना को समृद्ध करना है। इस प्रकार से श्रावणी पर्व मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्व है।

■■ डॉ विवेक आर्य

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

उफ! यह कृतघ्नता!!

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल जैसे चरित्रवान राष्ट्रभक्त के त्याग व बलिदान को पहचानने में भारतवासियों ने इतनी देर लगा दी, तुर्की के राष्ट्रपति मुस्तफा कमाल पाशा ने तो 1936 में बसे नए जिले का नाम ही भारत के इस महान शहीद के नाम पर 'बिस्मिल जिला' रख दिया था और इस जिले के अंतर्गत इसका मुख्यालय 'बिस्मिल शहर' के नाम से जाना जाता है

चंद्रशेखर आजाद से पहले भगतसिंह आदि के दल का नेतृत्व करते थे- अमर बलिदानी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल। चंद्रशेखर आजाद बिस्मिल के आस्तिक देशभक्ति पूर्ण व आर्यसमाजी विचारों से बहुत प्रभावित थे। काकोरी कांड में गिरफ्तार होने पर जेल में बंद बिस्मिल को स्वार्थी संसार की असलियत का कटु अनुभव हुआ जो उन्होंने फांसी आने (19 दिसम्बर 1927) से कुछ दिन पहले लिखी आत्मकथा में वर्णन किया है। सहानुभूति रखने वाले किसी वार्डन के हाथों यह पुस्तक गुप्त रूप से बाहर भेजी गई। पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रताप प्रेस से प्रकाशित हुई। ऐसा भी सुनने में आया है कि इसे सबसे पहले भजनलाल बुक सेलर द्वारा आर्ट प्रैस सिंध ने 'काकोरी षड्यंत्र' शीर्षक से छापा था। फिर वर्षों बाद पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रयास से इस आत्मकथा का पुनर्जन्म हुआ। बिस्मिल जी की गिरफ्तारी और फांसी के बाद उनके परिवार की जो दयनीय दशा हुई उसका वर्णन उनकी क्रांतिकारी बहन शास्त्री देवी ने बड़े मार्मिक शब्दों में किया है।

बिस्मिल जी के परिवार ने बड़ी गरीबी में जीवन बिताया था। पर पुन: क्रांति में कूदने से पहले बिस्मिल जी ने सांझे में कपड़े का कारखाना लगाकर स्थिति सुधार ली थी। जेल में जाने के बाद बिस्मिल जी ने अपने साझीदार मुरालीलाल को लिखा कि जो कुछ पैसा मेरे हिस्से का हो मेरे पिताजी को दे देना। बार-बार लिखने पर भी उसने एक पैसा भी नहीं दिया। उल्टे अकड़ दिखाने लगा और पिताजी से लड़ पड़ा।

शाहजहांपुर में रघुनाथ प्रसाद नामक एक व्यक्ति पर बिस्मिल जी माता पिता की तरह विश्वास करते थे। इनके पास बिस्मिल जी के अपने सब अस्त्र-शस्त्र (पांच) और धन (5000/-) रखे हुए थे। बिस्मिल जी ने वकील को लिखा कि मेरे रुपए मेरे पिताजी को और हथियार बहन शास्त्री देवी को दे देना। वह भी टालता रहा और कुछ नहीं दिया। घर पर पुलिस का इतना आतंक छाया हुआ था कि उनके परिवार से कोई बात तक नहीं करता था। उनके अपने मित्र उनके पास आते हुए डरते थे। ऐसे बुरे समय में महान क्रांतिकारी पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी ने लगभग 2000/- चंदा करके बिस्मिल आदि साथियों का अभियोग लड़ने में सहयोग किया। बिस्मिल के पिताजी के लिए पंडित जवाहरलाल ने 500/- भिजवाए। विद्यार्थी जी इन्हें परिवार के लिए 15/- मासिक देते रहे। जब बहन शास्त्री देवी को पुत्र उत्पन्न हुआ तब विद्यार्थी जी ने एक सौ रुपए सहायतार्थ भेजे और साथ ही यह भी कहा भेजा कि आप यह न समझें कि मेरा भाई नहीं है, हम सब आपके भाई हैं। बिस्मिल जी की बहन ब्रह्मा देवी इनकी फांसी (मृत्यु) से इतनी दु:खी हो गई कि तीन-चार माह बाद ही इस असह्य शोक से पिंड छुड़ाने के लिए विष खाकर मर गई। थोड़े दिन बाद ही इनका छोटा भाई रमेश बीमार पड़ गया। (संभवत: सुशील चंद्र फांसी से पहले ही चल बसा था) रमेश की चिकित्सा धन के अभाव में (डॉक्टर ने 200/- मांगे थे) ठीक से नहीं हो पाई और वह भी चल बसा। अब घर में खाने को दाने और पहनने को कपड़े न थे। ऐसी अवस्था में उपवास के अतिरिक्त और कोई चारा न था। अंत में उपवास करते-करते पिता श्री मुरलीधर जी भी दु:खों की गठड़ी माता (मूल मंत्री देवी) जी के सिर पर रखकर इस असार संसार को छोड़ चले। माताजी पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। इसके 1 महीने बाद बहन शास्त्री देवी भी विधवा हो गई। इनके पास एक पुत्र 3 साल का था।

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल जैसे चरित्रवान राष्ट्रभक्त के त्याग व बलिदान को पहचानने में भारतवासियों ने इतनी देर लगा दी, जबकि श्री सुधीर विद्यार्थी के अनुसार तुर्की के राष्ट्रपति मुस्तफा कमाल पाशा ने तो 1936 में बसे नए जिले (केन्या से आइए विस्थापितों के लिए) का नाम ही भारत के इस महान शहीद के नाम पर 'बिस्मिल जिला' रख दिया था और इस जिले के अंतर्गत इसका मुख्यालय 'बिस्मिल शहर' के नाम से जाना जाता है। तभी तो कवि को कहना पड़ा-

अच्छाइयों की चर्चा जिनकी जहान में है।
उनका निवास अब भी कच्चे मकान में है।।

समाचार - सूचनाएं

- 14 जुलाई : अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में भजनों और ज्ञान चर्चा का आनंद भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य सुमन एवं श्रद्धालु बहनों और भाइयों द्वारा व पूर्व पार्षद श्री यशपाल आर्य जी द्वारा हास्य योग तथा उद्बोधन-वैदिक विद्वान आर्य रवि देव गुप्त जी द्वारा किया गया। संयोजक-आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी रहे।
- 19 जुलाई : भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक मंगल पांडे की जयंती ऑनलाइन मनाई गई।
- 23 जुलाई : अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद और बालगंगाधर तिलक की जयंती पर उन्हें भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 26 जुलाई : कारगिल विजय दिवस के अवसर पर भारत की सेना के वीरों को नमन किया गया। जिनके कारण हमें कारगिल विजय मिली।
- 29 जुलाई : भक्तराज अमीचंद्र की पुण्यतिथि पर नमन किया गया।
- 12 अगस्त : योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी।
- 14 अगस्त : हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस आर्यों के लिए विजय दिवस है।
- 15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात ब्रह्मचारियों द्वारा देशभक्ती के गीतों व भाषण का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। आप सभी सदस्य सादर आमंत्रित हैं।
- 18 अगस्त : नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्मृति दिवस।
- 23 अगस्त : पं. इंद्र विद्यावाचस्पति स्मृति दिवस।
- 29 अगस्त : पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति दिवस।

स्वतंत्रता दिवस, श्रावणी पर्व और योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्तजनों को स्वतंत्रता दिवस, श्रावणी पर्व, योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर हर प्रकार की सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई। स्वतंत्रता दिवस, श्रावणी पर्व, योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

■ प्रबंध संपादक

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2020 को समाप्त होने वाला है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

प्रेरक जीवन के धनी
योगीराज श्रीकृष्ण

डॉ. महेश विद्यालंकार

भारत की विशेषता एवं आकर्षण रहा है। कि इस देश को महापुरुषों एवं सद्ग्रंथों की परम्परा विरासत में मिली है। जैसे ऋषि-मुनि संत-तपस्वी, त्यागी, उपकारी महापुरुष और वेद, दर्शन, गीता, रामायण आदि ग्रंथ इस देश को मिले हैं, वैसे अन्य देशों के पास नहीं है। महापुरुषों की लम्बी परम्परा में योगीराज श्रीकृष्ण का नाम सम्पूर्ण मानव जाति बड़ी श्रद्धा, सम्मान, आदर एवं पूजनीय भाव से लेती है अधिकांश लोग उनमें दैवीय गुण युक्त पूजा भाव रखते हैं। योगीराज श्रीकृष्ण धर्मात्मा, पुण्यात्मा तपस्वी, त्यागी, योगी, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, निरहंकारी, लोकोपकारी युग निर्माता आदि विशेषताओं से पूर्ण महापुरुष थे। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व पर न जाने कितना लिखा-पढ़ा सुना और बोला गया है फिर भी उनका वास्तविक प्रामाणिक सत्य जीवन चरित आज हमारे से ओझल हो रहा है। यही उनके प्रति सबसे बड़ी त्रासदी एवं कृतघ्नता है।

भारत का सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृति पूजा पाठ, धर्म कर्मकांड आदि दो महापुरुषों मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगीराज श्रीकृष्ण पर टिका है। इन दोनों दिव्यात्माओं को अलग कर दिया जाय तो कुछ भी पौराणिक जगत के पास नहीं बचता है। योगीराज श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय, अद्वितीय, दिव्य, भव्य, प्रेरक, आकर्षक एवं बहुआयामी था। इसी के कारण हजारों वर्षों के घात-प्रतिघातों, परिवर्तनों और विवादों के झेलने के बाद आज भी पूजित, स्मरणीय, वंदनीय एवं अलौकिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित व सम्मानित हैं। महाभारत काल में अनेक विशेषताओं से युक्त महापुरुष हुए, मगर सभी का जन्मदिन नहीं मनाया जाता है। सूचना, पत्रक आदि के बिना सबको योगीराज श्रीकृष्ण की जन्मतिथि याद है। जितनी धूमधाम, सजावट-बनावट, भव्यता, व पूज्यभाव से श्रीकृष्ण का जन्मदिन विश्वस्तर पर प्रदर्शित और मनाया जाता है, ऐसे और किसी का नहीं मनाया जाता है। श्रीकृष्ण मानवता के रक्षक, पालक तथा उद्धारक थे। इसलिए मानव समाज उनका जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाता है।

श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक परिस्थिति में जेल में जन्म हुआ। जन्म से पहले ही मृत्यु के वारंट निकल गए। पराये घर में यशोदा माता की गोद में पले। असली माता-पिता वासुदेव और देवकी थे यशोदा मां ने माता की भूमिका इतनी सुंदरता, कुशलता, निपुणता और वात्सल्यपूर्ण निभाई कि लोग असली माता देवकी को भी भूल गए। विकट परिस्थितियों में तथा मजबूर होकर मामा कंस को प्रजा एवं धर्म रक्षार्थ मरवाना पड़ा। श्री कृष्ण जी का सारा जीवन मुसीबतों का अजायबघर रहा है। निरन्तर आक्रमण, संघर्ष, कलह, अशांति आदि के कारण और मदांध जरासंध की बढ़ती ईष्या-द्वेष से बचने के लिए मथुरा से दूर वे द्वारिका चले गए। जिससे जरासंध का बैर-विरोध शांत हो जाये। अंत एक बहेलिए के आकस्मिक तीर से हुआ। योगीराज का सम्पूर्ण जीवन **परित्राणाय साधूनाम्** सज्जनों की रक्षा हो, **विनाशाय च दुष्कृताम्,** दुष्टों का दलन हो, **धर्म संस्थापनार्थाय** धर्म की रक्षा और अधर्म का नाश हो, इसी उद्देश्य में सारा जीवन निकला। इस उदेश्य की पूर्ति और कार्यों की सिद्धि के लिये उन्हें नानारूप धारण करने पड़े। उन्हें कई बार विरोध, कष्ट, मानसिक पीड़ा और अपमान का जहर पीना पड़ा।

(शेष अगले अंक में)

दम तोड़ रही है लोकगीतों की रानी 'कजरी'

संगीत के पुराने जानकार आज भी मानते है कि कजरी सिर्फ गायन भर नहीं है, बल्कि यह सावन के मौसम की सुंदरता और उल्लास का उत्सवधर्मी पर्व है। कजरी वह विधा है जिसमें सावन, भादों के प्रेम, वियोग और मिलन एवं वीर रस का चेहरा सामने आता है

करीब दो दशक पहले तक सावन की रिमझिम फुहारों के बीच ग्रामीण अंचलों में 'कजरी' के बोल वातावरण में मिठास घोलते नजर आते थे लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का चोला ओढ़ने की आतुरता ने लोकगीतों की रानी के कद्रदानों को लीलना शुरू कर दिया जिसके चलते परंपरागत गीत शैली को आज अपनी अस्मिता बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। संगीत के पुराने जानकार आज भी मानते है कि कजरी सिर्फ गायन भर नहीं है, बल्कि यह सावन के मौसम की सुंदरता और उल्लास का उत्सवधर्मी पर्व है।

कजरी वह विधा है जिसमें सावन, भादों के प्रेम, वियोग और मिलन एवं वीर रस का चेहरा सामने आता है। दो दशक पहले तक सावन शुरू होते ही गांवों में पटोहे की शान समझी जाने वाली कजरी गीत युवतियों की जुगलबन्दी की मिठास सुनने के लिए राहगीर भी कुछ पल ठहर जाते थे लेकिन पाश्चात्य जीवन शैली, आधुनिक मनोरंजन के साधन, जिंदगी की भागदौड़ एवं व्यस्तताओं के बीच सावन में कजरी के बोल इतिहास बनकर हमारी प्राचीन परम्परा से गायब हो रहे है। नामचीन कजरी गायिका अजिता श्रीवास्तव ने 'यूनीवार्ता' से कहा " सावन में लोक गीतों के स्वर वातावरण में एक अलौकिक रस घोलते थे लेकिन समय बदला और लोगों का रुझान परंपरागत मनोरंजन के साधनों एवं अपनी रीतियों से पीछे हटता गया। आधुनिकता की चकाचौंध ने प्राचीन संस्कृति को पीछे छोड़ दिया और इसी के साथ पीछे छूट गई हमारी संस्कृति और परंपराएं। "कजरी विधा के लिए संगीत

नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त अजिता ने बताया कि शहर तो दूर अब गांवों में भी सावन के मधुर गीत सुनाई नहीं देते। सावन का महीना प्रकृति की समृद्धि और भक्ति का महीना माना जाता है। हर तरफ फैली हरियाली जीवन में मस्ती भर देती है। लगातार प्रकृति से बढ़ती दूरी के कारण सावन की मस्ती भी इंसानी जिंदगी से दूर होने लगी है।

समय के साथ लोकसंगीत के दूसरे प्रारूपों में तो बहुत बदलाव आए, लेकिन कजरी जस की तस बनी रही। किसी कजरी गीत का प्राचीनतम उपलब्ध उदाहरण तेरहवीं शताब्दी के सूफी कवि अमीर ख़ुसरो की बहुप्रचलित रचना है - 'अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया।' भारत में अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की एक रचना 'झूला किन डारो रे अमरैया' भी अवध में बेहद प्रचलित है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ब्रज और भोजपुरी में कुछ कजरी गीतों की रचना की है। भारतेंदु काल को कजली का स्वर्णिम युग कहते है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की कजरी लोकगायन की वह शैली जिसमें परदेश कमाने गए पुरुषों की सियां अपनी विरह-वेदना और अकेलेपन का दर्द गीतों के माध्यम से व्यक्त करती हैं। अब न तो कजरी के कलाकार रह गए और नहीं कद्रदान। नव युवतियों को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं और नहीं वह इसे सीखने का प्रयास करती हैं। उन्हें यह कला पुरातन प्रतीत होती है। उन्हें बस फिल्मी धुन पर नाचना आता है। उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश के कुछ इलाकों में कजरी को कभी लोकगीतों की रानी का दर्जा हासिल था।

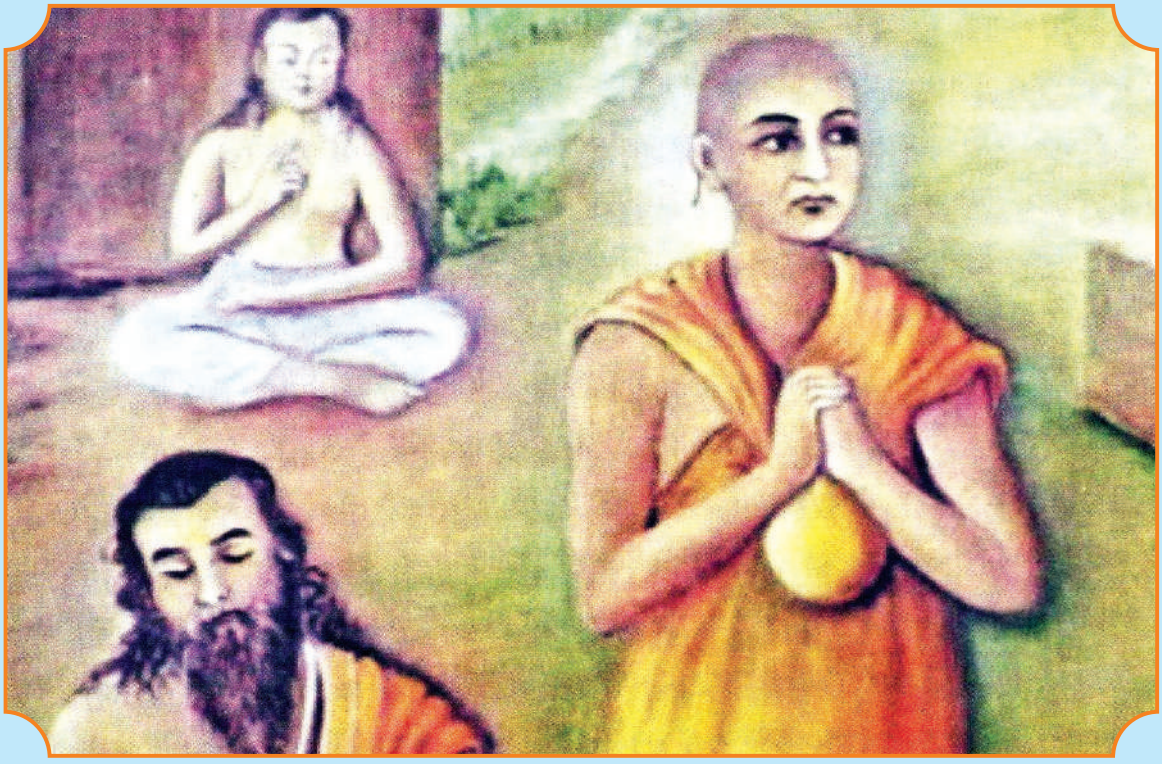

मूलशंकर संन्यास लेकर योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द बने।

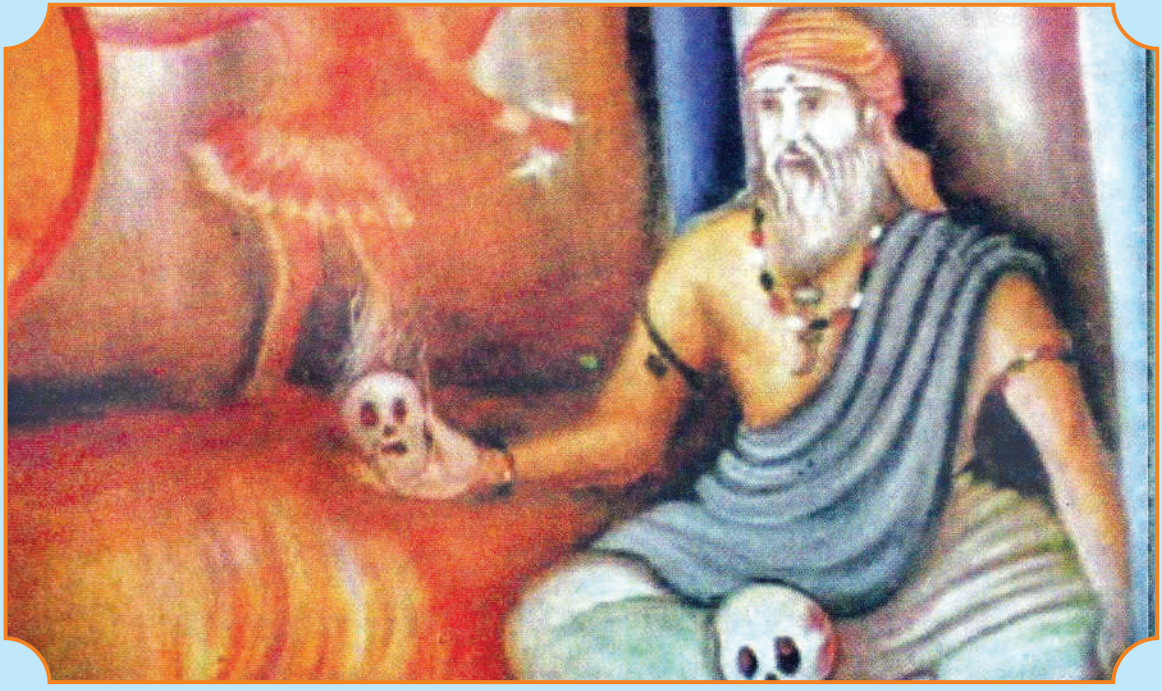

रिद्धी-सिद्धि का विरोध करते योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द जी।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द जी के प्रेरणादायी छाया चित्र

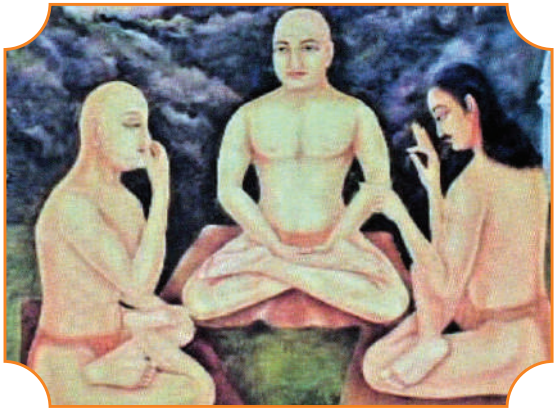
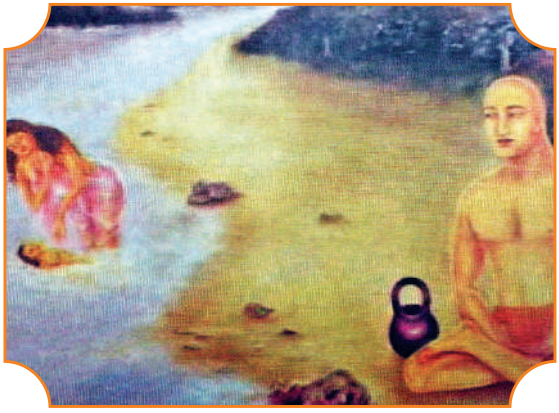
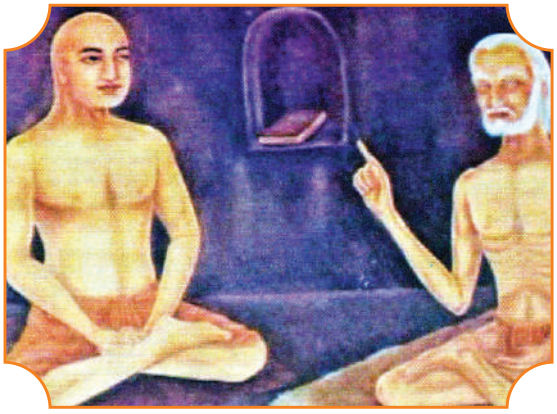
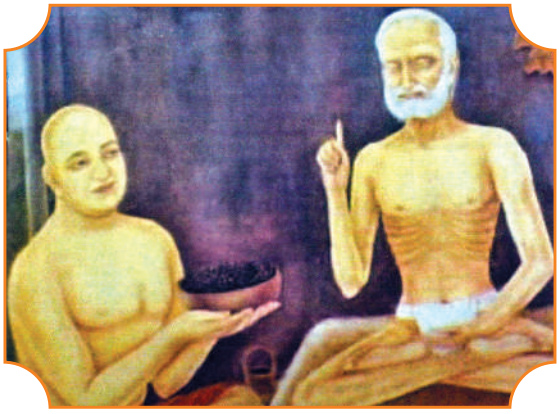
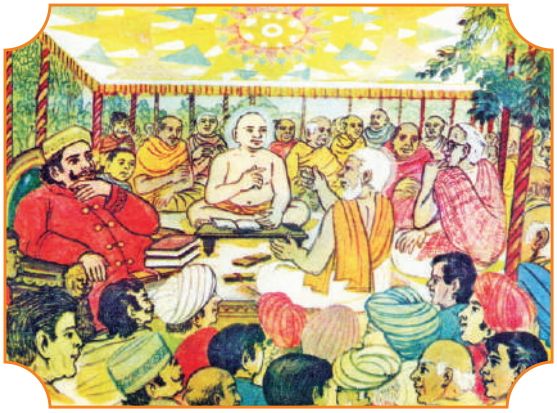
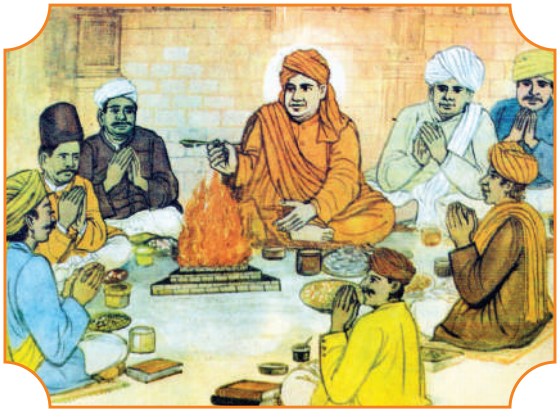

ओ३म्
विश्ववारा संस्कृति
ओ३म्
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221